



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पूर्वाशा

वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका

तीसवां अंक : 2020-2021



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग - 793 001.



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, दिनांक 07 अक्टूबर 2020 को मेघालय के माननीय राज्यपाल, श्री सत्य पाल मलिक से भेंट करती हुई ।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग, दिनांक 15 अक्टूबर 2020 को सी.ओ.पी.यू. के अध्यक्ष के साथ बैठक में सी.ओ.पी.यू. के सदस्यों को संबोधित करती हुई ।



पूर्वाशा परिवार

संरक्षक

श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब
महालेखाकार (लेखापरीक्षा),
मेघालय, शिलांग - 793 001

संपादक

श्री सागर विजय काले - उप महालेखाकार (ए.एम.जी. - I एवं III)

सहयोग

श्री एल. सिमते	-	हिन्दी अधिकारी
मुहम्मद जियाउल हक	-	वरिष्ठ अनुवादक
श्री सोनु कुमार साव	-	कनिष्ठ अनुवादक

मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं, रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

आवरण पृष्ठ का छायाचित्र : मेघालय राज्य की राजधानी शिलांग से 56 कि.मी. की दूरी पर स्थित विश्व प्रसिद्ध “डबल डेकर लिविंग रूट ब्रिज” का मनोरम दृश्य।

भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
(सदैव ऊर्जावान; निरन्तर प्रयासरत)

राजभाषा प्रतिज्ञा

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 तथा राजभाषा संकल्प 1968 के आलोक में हम, केन्द्र सरकार के कार्मिक यह प्रतिज्ञा करते हैं कि अपने उदाहरणमय नेतृत्व और निरन्तर निगरानी से अपनी प्रतिबद्धता और प्रयासों से प्रशिक्षण और प्राइज से अपने साथियों में राजभाषा प्रेम की ज्योति जलाए रखेंगे, उन्हें प्रेरित और प्रोत्साहित करेंगे। अपने अधीनस्थ के हितों का ध्यान रखते हुए, अपने प्रबंधन को और अधिक कुशल और प्रभावशाली बनाते हुए राजभाषा हिन्दी का प्रयोग, प्रचार और प्रसार बढ़ाएंगे। हम राजभाषा के संवर्द्धन के प्रति सदैव ऊर्जावान और निरन्तर प्रयासरत रहेंगे।

जय राजभाषा ! जय हिन्द !

हर राष्ट्र के पास अपना चिन्तन होता है, अपनी भावनाएं होती हैं जिसे वह अपनी भाषा में व्यक्त करता है। मैं, यह मानता हूँ कि भाषा केवल अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं होती, बल्कि उससे बोलने वालों की संस्कृति और संस्कार भी उससे जुड़े होते हैं। भाषा जहाँ अपनी संस्कृति विरासत से उपजी हुई होती है, वहीं वह इस विरासत को आगे आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाती भी है। इसलिए भाषा का प्रश्न केवल एक अभिव्यक्ति के माध्यम का प्रश्न नहीं है बल्कि, यह हमारी सांस्कृतिक विरासत और हमारे देश के लोगों के संस्कार से भी जुड़ा है। फिर लोकतंत्रात्मक शासन पद्धति में तो भाषा का प्रश्न और भी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि जनता तभी कामकाज में सक्रिय रूप से भाग ले सकती है, जबकि राजकाज ऐसी भाषा में हो, जिसे वहाँ की जनता अच्छी तरह से समझ सकें।

- डॉ. शंकर दयाल शर्मा

“पूर्वाशा” वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका

अंक - तीसवाँ

वर्ष : 2020 - 2021

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या :
.	आपके पत्र		(i)-(vi)
.	माननीय गृहमंत्री जी का संदेश		(vii)-(x)
.	महालेखाकार का संदेश		(xi)
.	समाचार-पत्र कतरन		(xii)
.	सम्पादकीय		(xiii)
.	समाचार-पत्र कतरन		(xiv)
1.	ऑनलाइन अध्ययन के लाभ और नुकसान	सुश्री शाहनाज बेगम	1-3
2.	हिन्दी का पत्र	श्री मिथिलेश कुमार	4
3.	कोरोना महामारी का सकारात्मक प्रभाव	श्रीमती तारा देवी सुनार	5-6
4.	व्यवसायिक शिक्षा	मुहम्मद जियाऊल हक	7-8
5.	सोशल मीडिया एक विजुअल वर्ड	श्री सोनु कुमार साव	9
6.	पिता पर खूबसूरत कविता	श्री शौर्य मिश्र	10
7.	एक कविता हर माँ के नाम	सुश्री स्निग्धा मिश्र	10
8.	चिड़िया रानी	श्रीमती अनिमा क्षेत्री	10
9.	अंजाम	सुश्री विद्या भारती	11
10.	पुस्तक	श्री रोहित थापा	12
11.	महिलाओं की समाज में भूमिका	श्रीमती रोज बेगम	13-14
12.	मेरी चेरापूँजी यात्रा	श्री विनोद कुमार	15-16
13.	मैं, बयौं नहीं कर सकता	श्री सुप्रीय मंडल	17
14.	यूँहि आसान नहीं होता	श्रीमती कमला मंडल	17
15.	लड़कियों की शिक्षा	श्री सुमित दास	18
16.	कंप्यूटर	श्रीमती अरूणा थापा	19
17.	वैश्विक अर्थव्यवस्था में हिन्दी का महत्व	श्री गणेश भुजेल	20
18.	कोविड-19 की यंत्रणा	श्री सेंडरसन सुन	21



क्रमांक	विषय	लेखक/लेखिका	पृष्ठ संख्या
19.	अर्जुन के तीर	 श्री दीपक कुमार	21
20.	बाल मजदूरी	 सुश्री अमृता दास	22
21.	ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है	 श्रीमती मुमताज बेगम	23-24
22.	आदर्श विद्यार्थी	 सुश्री नीतू थापा	25-26
23.	गरीबी	 श्रीमती अपर्णा रानी दास	27
24.	पर्यावरण प्रदूषण	 श्री अलोक कुमार	28-29
25.	हैंड वाश	 श्री सुजीत कुमार दास	30
26.	एकता में बल है	 मुहम्मद अरिफउल हक	31-32
27.	दहेज प्रथा	 श्री दिनेश थापा	33-34
28.	समय का सदुपयोग	 श्रीमती प्रिया	35
29.	मोबाइल फोन की लत	 श्रीमती सुनिती रानी दास	36
30.	खेल का महत्व	 श्री नेत्र बहादुर थापा	37
31.	प्रार्थना	 श्रीमती ईबानिल्ला रिंझा	38
32.	जल ही जीवन है	 श्री रविन्द्र कुमार	39
33.	हिन्दी दिवस 2020 : एक संक्षिप्त विवरण		40
34.	दिन-प्रतिदिन के कार्य निर्वाहन में प्रचलित वाक्यांश		41
35.	कार्यालय से सेवा निवृत्त एवं स्वर्गीय कर्मचारियों के विवरण		42

- टिप्पणियाँ हिन्दी में लिखिए ।
- मसौदे हिन्दी में तैयार कीजिए ।
- शब्दों के लिए अटकिए नहीं ।
- अशुद्धियों से घबराइए नहीं ।
- अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए ।



आपके पत्र

1. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यन्त आकर्षक और मनमोहक है। साथ ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यन्त आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा) - II
पश्चिम बंगाल

2. पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख व रचनाएँ शिक्षाप्रद, ज्ञानवर्धक, प्रभावशाली एवं रुचिकर हैं। मेघालय की संस्कृति एवं वेशभूषा को दर्शाती पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही सुन्दर है। श्री रोहित थापा द्वारा लिखित “अपराजिता” कहानी में डॉ. चन्द्रा और उनकी माँ श्रीमती टी. सुब्रमण्यम का संघर्ष प्रेरणादायक है। सुश्री लानाफिका लिंगडोह द्वारा लिखित “मावलिननाँग : एशिया में सबसे स्वच्छ ग्राम” एक ज्ञानवर्धक लेख है। मुहम्मद अरिफ़ुल हक द्वारा लिखित लेख “ग्लोबल वार्मिंग” हमें पर्यावरण सुरक्षा के प्रति सचेत करती है। सुश्री ईबाशिडा का “नफरत की दिवारें तोड़ो” तथा श्री मिथिलेश कुमार का “मातृभाषा में शिक्षा” भी विशेषकर सराहनीय हैं।

हिन्दी पत्रिका के बहुमुखी विकास एवं उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / प्रशासन
महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय
दक्षिण रेलवे, चेन्नै

3. पत्रिका की सभी रचनाएँ पठनीय एवं संग्रहणीय है। पत्रिका का मुद्रण एवं संपादन श्रेष्ठ है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / राजभाषा
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
नई दिल्ली

4. पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ पठनीय, रूचिकर एवं प्रेरणा दायक है। इस पत्रिका में सामाजिक जीवन से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर प्रेरक एवं ज्ञानवर्धक लेख लिखे गए हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी कक्ष
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
छत्तीसगढ़, रायपुर

5. पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ सुरूचिपूर्ण, पठनीय एवं सराहनीय हैं। श्रीमती कमला मंडल द्वारा लिखित “हिन्दुस्तान की होगी जय”, सुश्री नीतू थापा की “ताकत का घमंड” तथा श्री नेत्र बहादुर थापा की “समय से पहले और किस्मत से ज्यादा नहीं मिलता” उल्लेखनीय है। अन्य सभी रचनाएँ भी उत्कृष्ट हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं सम्पादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / राजभाषा
प्रधान निदेशक, केन्द्रीय, मुम्बई का कार्यालय
बांद्रा (पूर्व), मुम्बई

6. पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्रीमती डोन्ना एम. नोंगख्लाव, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना “सितारों की जालसाजी”, श्री मिथिलेश कुमार, डाटा एंट्री ऑपरेटर का लेख “स्वाभिमान का प्रतीक - मातृभाषा में शिक्षा” तथा श्रीमती रोज बेगम, माँ - मुहम्मद जियाऊल हक, वरिष्ठ अनुवादक का लेख “नारी शिक्षा का महत्व” उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं। पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं सम्पादक मण्डल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

(ओ. श्रीनिवास)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा- II)
महाराष्ट्र, नागपूर

7. पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। श्रीमती ए.एम. लिग्सकोर, कनिष्ठ अनुवादक का संस्मरण “मेघालय: बादलो का घर” एवं सुश्री ईबाशिडा हिनजोटा, आशुलिपिक की कविता “नफरत की दीवारें तोड़ो” अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएँ ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय है। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

(मुकेश कुमार यादव)

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)

इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली

8. ये अंक अपने कलेवर, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत ही आकर्षक और मनोहरी बन पड़ा है। पत्रिका में सम्मिलित सामग्री उच्च स्तर की है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक, मनोरंजक, पठनीय एवं सराहनीय है। इस अंक में प्रकाशित आलेख कविताएँ, कहानियाँ, संस्मरण आदि अत्यन्त स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। श्री नेत्र बहादुर थापा द्वारा रचित लेख “समय से पहले और किस्मत से ज्यादा नहीं मिलता” जीवन की सच्चाई को दर्शाता है।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण बन रही है। यह बहुत ही सकारात्मक प्रक्रम है। पत्रिका भविष्य में और बेहतर करें यही कामना है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

(सुभाष चंद यादव)

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)

तमिलनाडु, चेन्नई

9. पत्रिका में संकलित रचनाएँ लेखकों के रचना-संसार के विविध पहलुओं पर प्रकाश डालने वाली हैं। पत्रिका में विभिन्न कार्यक्रमों के छायाचित्र आकर्षक हैं तथा संकलित रचनाओं की सादगी भी प्रशंसनीय है। इनमें से जो रचनाएँ अति उत्तम लगीं, वो हैं “सच्चरित्रता”, “नारी शिक्षा का महत्व”, “विज्ञान और तकनीकी”, “दोस्त का महत्व (कीमत)”, “ताकत का घमंड” एवं “ग्लोबल वार्मिंग” आदि। कार्यालय के प्रायः सभी वर्ग के कर्मियों ने जिस प्रकार अपनी सृजनशीलता से पत्रिका को सुसज्जित किया है वो अन्य कार्यालयों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण है। हम मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा करते हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पुनः हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाओं सहित।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिन्दी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
उत्तराखण्ड

10. पत्रिका का यह अंक स्तरीय रचनाओं से परिपूर्ण है। पूर्वोत्तर के राज्य मेघालय की लोक संस्कृति से संबंधित आलेख “मेघालय: बादलों का घर”, “मावलीननहगः एशिया में सबसे स्वच्छ ग्राम”, इस अंक को विशेष बनाती हैं। इसके अलावा इस अंक में शामिल अन्य रचनाएँ भी बेहद पठनीय और ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के आकर्षक कलेवर से संपादकीय विशिष्टता का पता चलता है।

पूर्वोत्तर में राजभाषा हिन्दी के क्रियान्वयन और प्रचार-प्रसार में “पूर्वाशा-पत्रिका अपनी भूमिका को सफलतापूर्वक निभा रही हैं। यह भविष्य में और बेहतर करे, यही कामना है।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
बिहार, पटना

11. संपादक मंडल का प्रयास सराहनीय एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में संकलित “शब्द”, “अपराजिता”, “सच्चरित्रता” व अन्य सभी रचनाएँ प्रभावी, सारगर्भित व पठनीय हैं।

पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के आगामी अंकों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
महालेखाकार का कार्यालय (आ.व.रा.ले.प.)
कर्नाटक

12. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ ज्ञानवर्धक, पठनीय, प्रेरक एवं रोचक हैं । विशेषकर मुहम्मद जियाउल्ल हक का लेख “सच्चरित्रता”, श्री मिथिलेश कुमार का लेख “स्वाभिमान का प्रतीक - मातृभाषा में शिक्षा”, श्रीमती मुमताज बेगम का लेख “विज्ञान और तकनीकी” एवं श्रीमती ए.एम. लिंगस्कोर का लेख “मेघालय: बागलों का घर” सराहनीय एवं प्रशंसनीय है । पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक बधाई ।

पत्रिका की निरन्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-

हिन्दी अधिकारी

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) चेन्नै का कार्यालय
चेन्नै

13. पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट एवं उच्च स्तरीय हैं । पत्रिका का मुख पृष्ठ व मुद्रण विशेष रूप से सराहनीय है । इसके साथ ही छाया चित्रों का संकलन उत्तम हैं । हिन्दी भाषा विश्व पटल पर नित नए आयाम स्थापित कर रही है और इस कार्य में पत्र-पत्रिकाओं का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है । पत्रिका में संकलित सभी रचनाएँ अति उत्तम हैं परन्तु मुहम्मद जियाउल्ल हक का लेख “सच्चरित्रता”, श्री मिथिलेश कुमार का लेख “स्वाभिमान का प्रतीक - मातृभाषा में शिक्षा”, श्रीमती ए.एम. लिंगस्कोर का लेख “मेघालय: बागलों का घर” विशेष रूप से सराहनीय हैं ।

पत्रिका के सम्मानित संपादक मण्डल के सदस्यों और हिन्दी की सार्थकता के लिए प्रयासरत आपकी राजभाषा पत्रिका “पूर्वाशा” के उज्ज्वल भविष्य के लिए “सुगन्धा” परिवार की हार्दिक शुभकामनाएँ ।

ह/-

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
पंजाब, चण्डीगढ़

14. पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं । विशेषकर रूप से “स्वाभिमान का प्रतीक - मातृभाषा में शिक्षा”, “नारी शिक्षा का महत्व”, “हिन्दुस्तान की होगी जय” “विज्ञान और तकनीकी”, “दोस्त का महत्व (कीमत)”, “ताजमहल”, “रिमझिम बरस रहा है पानी” आदि रचनाएँ अत्यन्त सुखचिपूर्ण, ज्ञानवर्धक व मनोरंजक हैं । उत्कृष्ट संयोजन एवं संपादन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं ।

पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं ।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा, चण्डीगढ़

15. पत्रिका का सम्पादन सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। विशेष तौर पर “सच्चरित्रता”, “आंखे”, “नारी शिक्षा का महत्व”, “विज्ञान और तकनीकी”, “ताकत का घमंड” आदि रचनाएँ प्रेरणादायक और सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु इस नर्मदा परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (ऑडिट- II),
भोपाल

16. पत्रिका की सभी रचनाएँ प्रशंसनीय हैं। मुहम्मद जियाउल्ल हक का लेख “सच्चरित्रता”, श्रीमती ए.एम. लिंगस्कोर का लेख “मेघालय: बागलों का घर” एवं श्री सुमित दास की “नन्ही गौरैया” सराहनीय हैं।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

ह/-

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)
कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
चंडीगढ़

17. आपकी पत्रिका हिन्दी के प्रचार-प्रसार में महिला भूमिका निभा रही है। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रोचक एवं पठनीय हैं।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया सुश्री शाहनाज बेगम का लेख “जय शंकर प्रसाद”, श्रीमती कमला मंडल की कविता “हिन्दुस्तान की होगी जय”, सुश्री नीतू थापा की कहानी “ताकत का घमंड” एवं सुश्री लानाफिका लिंगडोह का लेख “मावलिननांग: एशिया का सबसे स्वच्छ ग्राम” विशेष रूप से सराहनीय हैं।

पत्रिका के सफल संपादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

ह/-

कल्याण अधिकारी
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा व हकदारी)
राजस्थान, जयपुर



हिंदी दिवस 2021

के अवसर पर माननीय
गृहमंत्री जी का संदेश



राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

(vii)

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA



प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेन्दु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

“मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।”

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलतः इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियों को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

“जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।”

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल ‘कंठस्थ’ को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए ‘लीला हिंदी ऐप’, - *लर्निंग इंडियन लैंग्वेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप तथा ‘ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप’ भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह ‘प्र’ की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह ‘प्र’ की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूँ कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियों को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021


(अमित शाह)





महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
मेघालय, शिलांग
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT),
MEGHALAYA, SHILLONG.



संदेश

मुझे बेहद खुशी है इस वर्ष कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग की वार्षिक हिन्दी पत्रिका “पूर्वाशा” का 30 वां अंक ई-पत्रिका के स्वरूप में प्रकाशित हो रहा है। ई-पत्रिका प्रकाशन जैसे महत्वपूर्ण कदम से न केवल हमने कागजी प्रतियों के छापने की लागत में कमी की है, यह कदम इस पत्रिका को विभाग में हमारी वेबसाइट एवं ईमेल के द्वारा प्रसारित करने में भी लाभकारी होगा। मुझे आशा है कि “पूर्वाशा” के पाठक इस अंक में शामिल लेखों एवं रचनाओं का आनंद लेंगे।

हिन्दी हमारे देश की राजभाषा है। हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है, जो समस्त देश को एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास कर रही है। वैसे भी कहा जाता है कि भाषा का संबंध संस्कृति और संस्कारों से है। हिन्दीतर भाषी क्षेत्र में हिन्दी ई-पत्रिका का प्रकाशन कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों के अथक प्रयास से ही संभव हो पाया है। राजभाषा के उत्थान में हिन्दी पत्रिकाओं का प्रकाशन अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

“पूर्वाशा” के माध्यम से हमारा निरन्तर प्रयास बना रहेगा कि पूर्वोत्तर सहित पूरे राष्ट्र में हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास होता रहे तथा हिन्दी के प्रति सभी अपनी निष्ठा बनाए रखें। मैं, आशा करती हूँ कि यह पत्रिका कार्यालय के सभी कर्मचारियों के बीच हिन्दी के प्रयोग में रुचि बढ़ाने एवं लोकप्रिय बनाने में सक्षम होगी।

पत्रिका की सफलता की शुभकामनाओं सहित।


(शेफाली एस. अंदलीब)



सैनिकल

आपकी जुबान में आपके दिल की बात

नगर संस्करण

गुवाहाटी और डिब्रुगढ़ से एक साथ प्रकाशित

CONTINENTAL HINDI DAILY, GUWAHATI पंजीयन संख्या-040913/89 गुवाहाटी 16 सितंबर 2020, बुधवार, संवत् 2077, शक 1942, आश्विन मास, शुद्ध कृष्ण पक्ष-14, September 16, 2020 Wednesday

कार्यालय प्रधान महालेखाकार ने संयुक्त रूप से मनाया हिंदी दिवस

शिलांग, 15 सितंबर। कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) एवं क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से हिन्दी दिवस 14 सितम्बर 2020 को मनाया गया। वर्तमान कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में केन्द्र सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए दिशा-निर्देशों एवं मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) को ध्यान में रखते हुए तीनों कार्यालयों के केवल समूह अधिकारियों, शाखा अधिकारियों, हिन्दी कक्ष के अधिकारी तथा कर्मचारीगण तथा दोनों कार्यालयों के पत्रिका के तीन-तीन श्रेष्ठ रचनाकारों के विजेताओं को सम्मिलित (कुल 30 अधिकारी एवं कर्मचारीगण को शामिल) करते हुए एवं सामाजिक दूरी



को ध्यान में रखते हुए कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 14 सितम्बर, 2020 को

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में सीमित समय के लिए हिन्दी दिवस मनाया गया। हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर विनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में उपस्थित तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का

स्वागत किया। उन्होंने अपने भाषण में राजभाषा से संबंधित विविध जानकारी भी दी तथा कार्यालय में हिन्दी के उपयोग को और अधिक बढ़ावा देने की अपील की। इसके अलावा सम्पूर्ण राष्ट्र को एक कड़ी में पिरोये रखने के लिए हिन्दी भाषा की

एक अहम भूमिका है। इस भाषा के जरिये हम एक दूसरे की भावना को भली-भाँति समझ सकते हैं, अर्थात् दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यह भाषा सेतु का कार्य करती है। इसके अलावा उन्होंने यह भी कहा कि हमें हिन्दी के कठिन शब्दों के बजाए सहज-सरल शब्दों का उपयोग करना चाहिए तथा हम अंग्रेजी के शब्दों को लिप्यांतरण के रूप में भी उपयोग कर सकते हैं। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) और कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की वार्षिक हिन्दी पत्रिकाओं, क्रमशः नवीन पूर्वांचल संदेश के 15 वें अंक तथा पूर्वांचल के 29 वें अंक का विमोचन प्रधान महालेखाकार, महालेखाकार और प्रधान निदेशक के करकमलों द्वारा किया गया।

दैनिक पूर्वोदय

सही दिशा, सही खबर

संस्करण, 2021, dainikpuroday.com गुवाहाटी-जोहरा से एक साथ प्रकाशित A HORNAL GROUP PUBLICATION पृष्ठ: 17, आंक: 181, प्रकाश सं: 2028, पता: गुवाहाटी, गुवाहाटी 14, गुवाहाटी, गुवाहाटी

शिलोंग महालेखाकार (लेखापरीक्षा) कार्यालय में हिंदी दिवस

शिलोंग, 15 सितंबर (पृ.सं.)। क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय और कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शिलोंग द्वारा संयुक्त रूप से गत 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया गया।

इस मौके पर विनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी ने उपस्थित तीनों कार्यालयों के अधिकारियों व कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने राजभाषा से संबंधित विविध जानकारी दी।

इस दौरान कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की वार्षिक हिंदी ई-पत्रिका नवीन पूर्वांचल संदेश के 16वें अंक का विमोचन महानिदेशक



ने डिजिटल रूप में किया। गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रेषित संदेश को वरिष्ठ अनुवादक मोहम्मद जियाउल हक ने सुनाया। श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, कनिष्ठ अनुवादक ने सभा में

उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों से राजभाषा प्रतिज्ञा ली। वहीं ई-पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को पुरस्कृत किया गया। साथ ही कार्यालय लेखापरीक्षा व लेखा एवं हकदारी की

वार्षिक हिंदी पत्रिका और नवीन पूर्वांचल संदेश के लिए भी पुरस्कार दिए गए। कार्यक्रम का समापन वरिष्ठ लेखा अधिकारी आनंद कौशल के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।





सम्पादकीय

भाषा का संबंध संस्कृति और संस्कारों से है। पत्रिका एक माध्यम है, जो भाषा के द्वारा स्थानीय संस्कृति तथा संस्कारों की खुशबू बिखेरती है। पूर्वोत्तर एवं हिन्दीतर भाषी क्षेत्र में स्थित इस कार्यालय की वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका “पूर्वाशा” के जरिए न केवल हम राजभाषा को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं, अपितु समस्त पाठकों को मेघालय के प्राकृतिक व मनोरम दृश्यों से भी परिचित कराने की कोशिश करते हैं।

नई सूचना क्रांति तथा प्रौद्योगिकी के आगमन से समाज में हो रहे परिवर्तनों के साथ-साथ हिन्दी का तकनीकी प्रयोग भी बहुत आवश्यक हो गया है। विश्व की सबसे मधुर, सहज और सरल तथा वैज्ञानिक भाषा एवं भारतीय संविधान में राजभाषा का दर्जा प्राप्त हिन्दी की ई-पत्रिका प्रकाशित करने से हिन्दी अपना संदेश लिए बृहत्तर क्षेत्र तक सहजता से पहुँचेगी। “पूर्वाशा” के माध्यम से हमारा निरन्तर प्रयास बना रहेगा कि पूर्वोत्तर सहित पूरे देश में हिन्दी का उत्तरोत्तर विकास होता रहे तथा हिन्दी के प्रति सभी अपनी निष्ठा बनाए रखें।

वास्तव में इस पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के दिन प्रतिदिन के कार्यों में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। इसे आसान, रोचक और तथ्यपरक रूप से सँवारने में हमारे प्रयत्न में कुछ त्रुटियाँ हो सकती हैं, अतः भविष्य में इसे और अधिक सुदृढ़ बनाने हेतु आपके बहुमूल्य सुझाव एवं मार्गदर्शन अपेक्षित है।

शुभकामनाओं सहित।

सागर काळे

(सागर विजय काळे)

सम्पादक एवं

उप महालेखाकार (ए.एम.जी.- I एवं III)

(xiv)

ऑनलाइन अध्ययन के लाभ और नुकसान



- सुश्री शाहनाज बेगम
बहन - मुहम्मद जियाउल हक
वरिष्ठ अनुवादक

ऑनलाइन अध्ययन शिक्षा का एक आधुनिक डिजिटल तरीका है, जहाँ पर शिक्षक / शिक्षिका और छात्र / छात्रा इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, जैसे कि लैपटॉप, स्मार्टफोन, टैब या अन्य उपकरणों का उपयोग कर एक दूसरे से बातचीत करते हैं। अध्ययन की यह पद्धति या प्रणाली इन दिनों काफी प्रचलित है, जबकि कोविड-19 महामारी के फैलने के बाद हमें घर से बाहर न निकलने को कहा गया है। कोविड-19 महामारी को देखते हुए कई स्कूलों ने ऑनलाइन अध्ययन के तरीके को अपनाया है और इस प्रक्रिया को काफी हद तक सफल भी बनाया है। इन दिनों ऑनलाइन अध्ययन एक प्रचलन सा बन गया है। कोविड-19 के चलते तथा लॉकडाउन में कई स्कूलों ने पिछले दो वर्षों से ऑनलाइन अध्ययन की प्रक्रिया को अपनाकर इसे अधिक उपयोग में लाया है।

ऑनलाइन अध्ययन के लाभ -

अध्ययन की इस प्रक्रिया के अपने ही फायदें हैं। यह काफी सुविधाजनक और अध्ययन की बहुत सस्ती प्रक्रिया है। ऑनलाइन स्टडी के लाभों में कुछ महत्वपूर्ण लाभ का विवरण निम्नवत् है -

सुविधाजनक -

ऑनलाइन अध्ययन की इस विधि द्वारा छात्रों के साथ-साथ शिक्षकों के लिए भी काफी उपयोगी और सुविधाजनक है। दोनों ही अपने घर के बाहर बिना कदम रखें ही शिक्षा के सत्र में इस प्रक्रिया द्वारा भाग ले सकते हैं। उन्हें एक दूसरे से जुड़ने के लिए केवल एक अच्छे लैपटॉप / स्मार्टफोन या टैब एवं इंटरनेट कनेक्शन की आवश्यकता होती है। बस आप अपनी आवश्यकता की किताबों के साथ अपने कमरे में एक उचित स्थान पर आराम से बैठकर अपने क्लासमेट्स के साथ ऑनलाइन कक्षा में भाग ले सकते हैं।

सस्ता -

ऑनलाइन अध्ययन स्कूली शिक्षा प्रणाली के कई मामलों में काफी सस्ती विधि है। सबसे पहला यह कि आपको स्कूल जाने और वापस आने में ट्रांसपोर्ट व अन्य खर्चों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। दूसरा यह कि स्कूल के अन्य सभी खर्च कम हो जाते हैं। कभी-कभी पुस्तकें भी हमें ऑनलाइन ही उपलब्ध हो जाती हैं जिसकी कीमत हार्ड कॉपी की तुलना में काफी कम होती है। आप अपनी आवश्यकता के अनुसार इसे डाउनलोड कर सकते हैं, जिसमें कि वास्तविक किताबों की तरह ही सामग्री

उपलब्ध होती है। यहां तक आपको बस इंटरनेट कनेक्शन के पैसे ही खर्च करने होते हैं और कुछ नहीं।

सुरक्षित -

इसमें कोई संदेह नहीं कि ऑनलाइन अध्ययन सुरक्षित विकल्प है, जिसमें खतरे की संभावना बहुत कम होती है। यह आपके लिए एक वरदान के रूप में है, जबकि आपका घर से बाहर निकलना आपके लिए खतरनाक साबित हो सकता है। हम सभी कोविड-19 महामारी के बारे में अच्छी तरह से जान चुके हैं, जिसने पूरे विश्व को लॉकडाउन में डाल दिया है। जिसके कारण छात्र एक दूसरे के शारीरिक सम्पर्क में नहीं आते हैं और इसके कारण उनमें इस महामारी के फैलने की संभावना काफी कम हो जाती है। शुक्र है कि छात्र नियमित रूप से ऑनलाइन कक्षा में भाग लें रहें हैं जिसके कारण पाठ्यक्रम भी नहीं पिछड़ा है।

कम कागज का उपयोग -

ऑनलाइन शिक्षा की प्रक्रिया का एक और लाभ यह भी है कि इसमें कागजों का उपयोग बहुत कम हो जाता है। कक्षा प्रणाली की अपेक्षा डिजिटल प्रणाली से अध्ययन करने में कागज के उपयोग की मात्रा लगभग न के बराबर हो जाती है। आपको बस अपने में ये सब नोट करना होता है, जबकि आपका शिक्षक आपको बिना किसी कागज के भी आपको पढ़ा सकता है। इसके अलावा ऑनलाइन पाठ्यक्रम टेस्ट भी आयोजित किए जाते हैं, जिसके कारण कागज का उपयोग बहुत कम हो जाता है।

कम संकोच -

कक्षा की तुलना में ऑनलाइन अध्ययन में छात्र शिक्षक के बीच अधिक ताल-मेल देखा जा सकता है। आमतौर पर कक्षा में व्याकुलता ज्यादा मौजूद होते हैं जबकि ऑनलाइन कक्षा में इसकी संभावना काफी कम हो जाती है जिसके कारण छात्र शिक्षक द्वारा बतायी गयी बातों पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलती है। इसके अलावा छात्र अधिक संवेदनशील हो जाते हैं जिससे कि वो अपने संकोच को अपने शिक्षक के साथ बात करके उसका हल निकाल सकते हैं।

ऑनलाइन अध्ययन के नुकसान -

ऑनलाइन अध्ययन की प्रक्रिया में कई लाभों के अलावा कुछ नुकसान भी हमारे सामने प्रस्तुत होते हैं। जिस तरह वास्तविक कक्षा में जो उत्साह का वातावरण होता है, यहाँ उस वातावरण का अभाव होता है। एक जीवंत कक्षा या लाइव क्लास में जो आनंद का माहौल होता है, ऑनलाइन अध्ययन में उस माहौल की कमी होती है। यहाँ पर एक शिक्षक और छात्र एक दूसरे से केवल एक ही विषय को लेकर बातचीत और चर्चा कर सकते हैं। इसके अलावा इसके कारण गैजेट का ओवर एक्सपोजर से स्वास्थ्य के कई खतरे हैं, जैसे कि सिरदर्द, आंखों का कमजोर होना और एकाग्रता में कमी आना इत्यादि का खतरा भी बढ़ जाता है।

कैसे ऑनलाइन स्टडी छात्रों के लिए अच्छा नहीं है ? निम्नवत् प्रस्तुत है -

खुद पर नियंत्रण -

एक ऑनलाइन अध्ययन की सफलता आपके खुद के आचरण पर निर्भर करता है, चाहे वह किसी भी क्षेत्र में हो। किसी भी ऑनलाइन अध्ययन की प्रक्रिया सफल हुई या नहीं यह बात केवल आपके सीखने की उत्सुकता पर ही निर्भर करती है। हो सकता है कि आपका अध्यापक आपको न देख सकें, यह आपकी स्वतंत्रता पर निर्भर करता है कि आप सीखने के कितने इच्छुक हैं। आप खुद के मन को कैसे नियंत्रित कर उस कक्षा से कितना सीखते हैं यह आप पर निर्भर करता है।

ईमानदारी पर निर्भर -

यह ऑनलाइन अध्ययन की एक महत्वपूर्ण कमियों में से एक है। ऑनलाइन कक्षा में रहते हुए आपका ध्यान हमेशा के लिए उपर होनी चाहिए। उसके लिए आप कक्षा में स्वतंत्र नहीं हैं। आप ऑनलाइन कक्षा के प्रति कितने ईमानदार हैं, यह आपकी उपस्थिति पर निर्भर करता है। ऐसी कक्षा में सभी छात्र पर ध्यान देना शिक्षक के लिए संभव नहीं है।

केवल पाठ्यक्रम से सम्बन्धित बातें -

अक्सर एक ऑनलाइन कक्षा में विषय के उस बिन्दु पर चर्चा की जाती है जिस विषय में चर्चा की जानी होती है। आमतौर पर कक्षाओं में शिक्षक जहां अपनी निजी तथ्य और जोक्स भी शामिल करता है, ऑनलाइन कक्षा में इसकी कमी रहती है। कक्षा में जहां शिक्षक कई अन्य बातों के बारे में भी बात कर सकता है वही वह ऑनलाइन कक्षा में केवल विषय से सम्बन्धित बातें ही बताता है।

ओवर एक्सपोजर टू स्क्रीन -

ऑनलाइन अध्ययन में कक्षाओं के संचालन के लिए इलेक्ट्रॉनिक स्क्रीन गैजेट्स (लैपटॉप / स्मार्टफोन / टैब) की आवश्यकता होती है। छात्रों को लम्बे समय तक कभी-कभी 2 से 3 घंटे तक लगातार स्क्रीन पर देखना पड़ता है। इस तरह लम्बे समय तक स्क्रीन के ऊपर देखने के कारण हमारे स्वास्थ्य के प्रतिरोधक क्षमता पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके कारण कुछ छात्रों में सिरदर्द और आंखों की समस्या देखने को मिलती है।

सीमित बातचीत -

हालांकि शिक्षक और छात्रों के बीच ऑनलाइन कक्षा में बातचीत की कोई सीमा तय नहीं की गई है, फिर भी यहाँ एक सीमित मात्रा में बात की जाती है। एक शिक्षक को सभी छात्रों के प्रश्नों के उत्तर देने पड़ते हैं। इस कारण शिक्षक छात्रों को बस कुछ मिनट ही दें पाता है। इसके लिए शिक्षक बाध्य होता है।

हिन्दी का पत्र



- श्री मिथिलेश कुमार
डाटा एण्ट्री ऑपरेटर

मैं, हिन्दी हूँ। बहुत दुःखी हूँ। स्तब्ध हूँ। समझ में नहीं आता कहा से शुरू करूँ ? कैसे शुरू करूँ ? मैं, जिसकी पहचान, इस देश से है, इसकी मिट्टी से है, इसके कण-कण से है, अपने ही आंगन में बेइज्जत कर दी जाती हूँ। कहने को संविधान के अनुच्छेद 343 में मुझे राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य है कि वह मेरा प्रचार-प्रसार बढ़ाए, पर आज यह सब मुझे क्यों कहना पड़ रहा है ? नहीं जानती थी कि मेरा किसी “राज्य-विशेष” में किसी की जुबान पर आना अपराध हो सकता है।

मैं, कल-कल, छल-छल करती नदियों की तरह हर आम और खास भारतीय दृश्य में प्रवाहित होती हूँ। मैं, मंदिरों की घंटियाँ, मस्जिदों की आज़ान, चर्च की प्रार्थना और गुरुद्वारे के शब्द की तरह पवित्र हूँ। विश्वास करें मेरा कि मैं, दिखावे की भाषा नहीं हूँ और न ही इशारे की भाषा हूँ। मैंने अपने अस्तित्व से लेकर आज तक कितनी ही सखी भाषाओं को अपने आंचल से बांध कर हर दिन एक रूप धारण किया है। ऊर्दू, अरबी, फारसी से लेकर आधुनिक बाला अंग्रेजी तक को आत्मीयता से अपनाया है।

लेकिन कैसे समझाऊँ और किस-किस को समझाऊँ ? मैं, क्या कल की आई हुई कच्ची-पक्की बोली हूँ, जो मेरा नामोनिशान मिटा दोगे ? मैं इस देश के रेशे-रेशे में बुनी हुई, अंग-अंग में रची-बसी ऐसी जीवंत भाषा हूँ, जिसका रिश्ता जुबान से नहीं, दिल की धड़कनो से है।

मैंने खुले दिल से सब भाषा का, भाषा के शब्दों का, शैली तथा लहजे का स्वागत किया। यह सोचकर कि इससे मेरा ही विकास हो रहा है। मेरे ही कोश में अभिवृद्धि होगी। अगर मैंने भी इसी संकीर्ण सोच को पोषित किया होगा कि दूसरी भाषा से लिए गए शब्द नहीं अपनाऊँगी, तो भला आवेश से इतलाती, बलखाती तथा यहाँ तक कैसे पहुँच पाती ?

मैं, आप सबकी अपनी प्यारी हिन्दी।

धन्यवाद।

हिन्दी दुनिया की महान भाषाओं में एक है। भारत को समझने के लिए हिन्दी ज्ञान अनिवार्य है। हिन्दी का महत्व आज इसलिए और बढ़ गया है क्योंकि भारत आज शिक्षा, उद्योग और तकनीक के हिसाब से दुनिया का अग्रणी देश है।

- डॉ. मैग्रेशर

कोरोना महामारी का सकारात्मक प्रभाव



- श्रीमती तारा देवी सुनार
बहन - श्री पदम लाल सुनार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कोरोना महामारी ने सन् 2020 में लगभग पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया। कोरोना वायरस का प्रकोप निश्चित रूप से पूरे विश्व के लिए दुर्भाग्यपूर्ण है। इस महामारी ने हमारे जीने का अंदाज, हमारा रहन-सहन, खान-पान बदल दिया। यह कहना गलत न होगा कि कोरोना संक्रमण में हमारे जीवन के प्रति नजरिया भी बदल दिया।

कोरोना की पहली लहर ने हमें लॉकडाउन के दिन दिखाए। स्कूल-कॉलेज सब बंद हो गए। मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा आदि में ताला लग गया। एक अजीब निराशा, भय जैसे चारों ओर फैल गया हो। सब कुछ ठहर सा गया... जैसे पूरे विश्व की गतिविधि रुक गई हो। कोरोना की पहली लहर ने जहाँ लोगों को भयभीत किया वहीं दूसरी लहर में लोगों ने अपनों को खोया। रोते-बिलखते लोग, ऑक्सीजन सिलेंडर के लिए लंबी लाईन में खड़े लोग, मौत से जुझते लोग... यही खबर हमें रोज देखने व सुनने को मिलती थी। यह कहना गलत न होगा कि हम अनिश्चितता के दौर से गुजर रहे हैं। लोगों के सामने कई गंभीर चुनौतियाँ हैं, जो जीवन और आजीविका से जुड़ी हैं। संकट का यह दौर हमें बहुत कुछ सिखा गया है। हर सिक्के के दो पहलू होते हैं। कोरोना महामारी अपने साथ कई पैगाम लेकर आया। यह हमें जीवन के कई पाठ सीखा भी गया। जरूरत है उन्हें समझने, अपने जीवन में अमल करने की जिससे हमारा जीवन सुचारु रूप से चल सके।

सादगीपूर्ण जीवन -

कोरोना महामारी का सबसे बड़ा सकारात्मक पक्ष यह है कि इस संकट ने लोगों को सादगी से जीना सीखा दिया। लोगों को दोबारा स्वस्थ और सादगीपूर्ण जीवनशैली अपनाने के लिए प्रेरित किया। पहले जहाँ लोग शॉपिंग मॉल, सिनेमा घरों, रेस्टारां आदि में अपनी खुशियाँ ढूँढ़ते थे वहीं कोरोना संक्रमण ने लोगों को सादगीपूर्ण जीवन जीने का संदेश दिया है। कम संसाधनों में भी गुजारा किया जा सकता है - यह लॉकडाउन ने हमें सिखाया है। जितना है उसी में खुश रहने की तथा अपनी खोई हुई आदत को हम पुनः विकसित कर पाए। असली खुशी सादगी, सच्चाई और सेवा भाव में है और इन्हें अपनाकर जीवन संतोषजक हो पाएगा। यदि हम ओरो की जीवनशैली से अपनी जीवन की तुलना न करते हुए सीमित साधनों में खुश रह पाए तो जीवन आसान हो और सुखमय हो जाएगा। जहाँ लालच, ईर्ष्या भेदभाव के लिए कोई जगह नहीं होगी।

सेहत का महत्व -

सेहत जीवन की असली कुंजी है - यह पाठ कोरोना संक्रमण ने हमें अच्छी तरह सीखा दिया है। संक्रमण के डर से ही सही पर अब लोगों की दिनचर्या सुधरने लगी है। देर रात तक सोने वाले लोग भी सुबह उठकर

योगाभ्यास करने लगे। इससे लोगों में सकारात्मकता आ गई है। अच्छा स्वास्थ्य सुख का आधार है और इसके लिए नियमित योगा, कसरत जरूरी है। योग के साथ अब लोग संतुलित आहार को अधिक प्राथमिकता देने लगे हैं। अब लोग घर का खाना ही पसंद करते हैं। खाने में इम्यूनिटी बढ़ाने वाले खाद्य पदार्थ का इस्तेमाल होने लगा है।

प्रकृति जीवन का आधार -

पेड़-पौधे हमारे जीवन का आधार है। विकास की अंधी दौड़ में हम प्रकृति से दूर हो चले थे। कोरोना संकट के कारण लॉकडाउन में जब सब कुछ थम गया तब प्रकृति अपनी असली रूप में आ गई। नदियों का पानी पारदर्शी हो गया, पक्षी चहचहाने लगे, हवा शुद्ध हो गई। यह हमारे लिए एक बड़ा सबक है। सुकून भरी जिंदगी के लिए हमें जो कुछ भी चाहिए वह सब कुछ प्रकृति ने हमें उपहार स्वरूप दिए। प्रकृति को बचाने, बढ़ाने के लिए सजग रहने की जरूरत है।

परिवार की अहमियत -

लॉकडॉउन के दिनों ने हमें यह समझा दिया कि घर ही सबसे सुरक्षित जगह है और घर-परिवार से ही हमें सुख और सुरक्षा का कवच मिलता है। अपनों से दूर रहने के बाद अब लोगों को परिवार तथा रिश्तों की अहमियत का अहसास हुआ। भागदौड़ भरी जिंदगी में पारिवारिक रिश्ते अक्सर पीछे छूट जाते हैं, लेकिन लॉकडॉउन ने हमें परिवार पर फोकस करने एवं अपनों के सुख-दुःख को समझने के लिए भरपूर समय दिया है।

रचनात्मक प्रक्रिया का बोध -

कोरोना महामारी ने लोगों की अपनी रचनात्मक प्रतिभा का बोध कराया। लॉकडॉउन ने हमें अपने बारे में सोचने का भरपूर समय दिया। कोई कमाल का सिंगर बनकर उभरा तो कोई पाक कला में निपुण। किसी को किताबें लुभा रही है तो कोई योग कर रहा है। सब अपनी-अपनी तरह से जीवन में सकारात्मक के रंग भर रहे हैं। लोगों को अपनी शौक पूरा करने का काफी समय मिला। इससे समय का सदुपयोग तो हुआ ही, साथ ही मानसिक शांति का भी अनुभव हुआ। कोरोना के खोफ से निकलने में हमारी क्रियेटिविटी ने काफी साथ दिया।

समय के साथ धीरे-धीरे लोगों की जिंदगी पटरी पर वापस लौटने लगी है, फिर भी सेहत के प्रति सावधानी, फिजिकल डिस्टेंसिंग और सुरक्षा के नियमों का पालन जरूरी है। कोरोना वायरस का प्रकोप निश्चित ही दुर्भाग्यपूर्ण है पर इस संकट ने हमें जो कुछ भी सीखाया वह वाकई समझने योग्य है। अतीत के अनुभवों से हमने जो कुछ भी सीखा है, उसकी मदद से अपने वर्तमान को संवारने की कोशिश भी जरूरी है, तभी हमारा भविष्य बेहतर होगा। विकास की अंधी दौड़, भौतिकवाद से दूर रहकर यदि हम सादगी से जीवन की पथ पर चलेंगे तो निश्चय ही हमारा जीवन सुखमय होगा। सदियों से हम भारतीय सादा जीवन तथा उच्च विचार को अपनी जीवनशैली का हिस्सा बनाए हुए हैं। इन दिनों एक बार फिर हमें सादगी पूर्ण जीवन की ओर लौटना, तनमन की शुद्धता पर ध्यान देना और प्रकृति आधारित जीवनशैली अपनाना होगा।

व्यवसायिक शिक्षा



- मुहम्मद जियाउल हक
वरिष्ठ अनुवादक

व्यवसायिक शिक्षा लोगों को हुनरमंद और काबिल बनाती है। यह एक प्रकार की खास प्रशिक्षण होती है जो हमें किसी खास यांत्रिकी को करने के काबिल बनाती है और उस तकनीक को सिखाती है जो उस काम या यंत्र को चलाने के लिए जरूरी होता है। इसके अन्तर्गत पॉलीटेक्नीक, कंप्यूटर, बैंकिंग, वित्त, पर्यटन, व्यापार, शिल्पकार प्रशिक्षण योजना जैसे तकनीकी पाठ्यक्रम आते हैं, जिन्हें 10 वीं के बाद ही करके कार्य पाया जा सकता है। इसे कई सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा संपादित किया जाता है। यह उन लोगों के लिए सुनहरा अवसर होता है जिनकी किसी कारणवश पढ़ाई बीच में ही छूट जाती है या आर्थिक तंगी के कारण आगे पढ़ नहीं पाते।

व्यवसायिक शिक्षा का महत्व -

यह स्थिति तब और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, जब बात गरीबों की आती है। उनके पास इतने पैसे नहीं होते कि वो अपनी शिक्षा पूरी कर सकें। इस स्थिति में रोजगार पाने का एकमात्र साधन केवल व्यवसायिक शिक्षा ही रह जाती है, जो बेहद कम खर्चों में लोगों को कुशल कर रोजगार दिलाने में सहायक सिद्ध होती है।

अब इस क्षेत्र में भी आधुनिकता ने अपने पंख पसार लिए हैं। बहुत सारी कंपनियां भी प्रशिक्षित लोगों की तलाश में रहती हैं। विभिन्न जहब वेबसाइटों में कुशल लोगों की भर्ती निकलती रहती है, जिसमें अह्नलाइन आवेदन माँगे जाते हैं। कुछ प्रोफेशनल वेबसाइट अब ऑनलाइन पाठ्यक्रम भी कराती हैं। अब आप घर बैठे ही ऐसे पाठ्यक्रम कर सकते हैं। आपको कहीं जाने की आवश्यकता नहीं। सुदूर गाँव में बैठे लोगों के लिए यह व्यवस्था किसी वरदान से कम नहीं।

रोजगार के नए आयाम -

पहले बड़े ही सीमित अवसर होते थे रोजगार पाने के। कारपेन्ट्री, वेल्डिंग, अहटो-मोबाइल जैसे क्षेत्रों तक ही सीमित थे, लेकिन अब ऐसा नहीं है। बहुत सारे नए-नए क्षेत्रों का विकास हो गया है, जैसे - इवेंट मैनेजमेंट, टूरिस्ट मैनेजमेंट, होटल मैनेजमेंट, कंप्यूटर नेटवर्क मैनेजमेंट, रिटेल ट्रेनिंग एण्ड मार्केटिंग, टूर एण्ड ट्रवल्स मैनेजमेंट इत्यादि ऐसे कुछ क्षेत्र हैं, जिसमें आप निपुण होकर बेहतर भविष्य का निर्माण कर सकते हैं। कुशल हाथ ही एक नए और बेहतर कल का रचयिता हो सकता है। जब हर हाथ में हुनर होगा, तभी हमारा देश विकसित देशों की श्रेणी में खड़ा हो पाएगा।

भारत में व्यवसायिक शिक्षा की स्थिति -

हमारा देश युवाओं का देश है। आज का परिदृश्य उठा के देखे तो बढ़ती हुई बेरोजगारी सर्वाधिक चिन्ता का विषय है। इसका निराकरण करना केवल सरकार की ही नहीं, अपितु आम नागरिक का भी है और यह केवल तभी संभव है जब आम आदमी कुशल होकर रोजगार का सृजन करें। एक सौ तीस करोड़ की आबादी वाला हमारा देश

और सभी के लिए रोजगार उगा पाना सरकार के लिए भी नामुमकिन है। आज हमारे देश में कौशलबद्ध और विशेषज्ञ लोगों की माँग बढ़ रही है। व्यवसायिक शिक्षा, नौकरी पाने में जहब सीकर्स की मदद करती है, साथ ही उन्हें उपयुक्त प्रशिक्षण और कौशल प्रदान करती है। भारत का आई.टी. सेक्टर अपने कुशलता के कारण ही विश्व पटल के आकाश का ध्रुव तारा बना हुआ है।

विविध क्षेत्र -

यह बड़ा ही वृहद क्षेत्र है। इसे कई वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है, जैसे - वाणिज्य, गृह-विज्ञान, आतिथ्य विभाग, स्वास्थ्य एवं पराचिकित्सकीय, अभियांत्रिकी, कृषि इत्यादि। यह विविध कार्यक्रमों, जैसे - निफ्ट, रोलटा, मेड, डब्ल्यू.डब्ल्यू.आई, एन.एच.एम.आई.टी जैसी संस्थाएँ युवाओं को नए-नए पेशेवर कुशलता को सिखाकर उनका जीवन उन्नत कर रहे हैं।

व्यवसायिक शिक्षा के फायदे -

1. **कार्य हेतु तैयार** - व्यवसायिक शिक्षा हमें कार्य के लिए तैयार करता है। यह छात्रों को प्रशिक्षित कर उन्हें प्रशिक्षण और कौशल प्रदान करता है, जोकि इंटीरियर डिजायनिंग, फैशन डिजायनिंग, कम्प्यूटर नेटवर्किंग इत्यादि जैसे क्षेत्रों में बिना प्रशिक्षण कौशल के आप कुछ नहीं कर सकते। यदि इन क्षेत्रों में अपना भविष्य तलाशना है तो बिना ट्रेनिंग के काम नहीं चलने वाला।
2. **मितव्ययी शिक्षा** - सरकारी और गैर-सरकारी दोनों तरह के संगठन बहुत ही कम शुल्क में व्यवसायिक शिक्षा छात्रों को उपलब्ध करा रहे हैं। इससे आर्थिक रूप से पिछड़े और वंचित वर्ग भी इसका लाभ उठा सकते हैं। यह उन छात्रों के लिए किसी वरदान से कम नहीं जो किसी कारण अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं या जिनके घर की माली हालत ठीक नहीं और वो तीन-चार साल पढ़ाई नहीं कर सकते। ऐसे छात्र छमाही या सालाना पाठ्यक्रम करके रोजी-रोटी कमाने लायक बन सकते हैं।
3. **रोजगार के अनुकूल** - व्यवसायिक शिक्षा उपयुक्त प्रशिक्षण देकर रोजगार के नए अवसर प्रदान करता है। यह आज की जरूरत भी है और महत्वपूर्ण भी। बड़ी-बड़ी कम्पनियों को भी काबिल और हुनरमंद लोगों की तलाश रहती है। जिनके पास उपर्युक्त व्यवसायिक शिक्षा होती है, उनके पास नौकरी की कभी कमी नहीं रहती है। इनकी हर जगह मांग बनी रहती है।
4. **उन्नत करियर** - व्यवसायिक शिक्षा कार्य पाने में हर रास्ता आसान करती है। वो लोग जो पहले से कहीं कार्यरत हैं और स्वयं को और निखार कर अपना कार्य प्रोफाइल उन्नत करना चाहते हैं, ऐसे लोगों को व्यवसायिक शिक्षा बहुत बढ़िया प्लेटफ़ॉर्म है। इनकी अवधि अपेक्षाकृत कम होती है। इच्छुक छात्र बेहद कम समय में ट्रेड होकर अपनी कुशलता को बढ़ा सकते हैं और रोजगार के बेहतर अवसर पा सकते हैं।
5. **समय की माँग** - आज हर क्षेत्र में रोज नए शोध और अनुसंधान हो रहे हैं। इसको देखते हुए अपडेट रहना बहुत जरूरी है। समय के साथ-साथ आवश्यकताएँ भी बदलती रहती हैं। पहले लोग परंपरागत खेती-बाड़ी ही करके खुश रहते थे। जितना उगता था, पर्याप्त होता था, जनसंख्या कम थी और लोगों की जरूरतें भी। लेकिन, अब ऐसा नहीं है, देश की आर्थिक उन्नति के साथ-साथ लोगों का जीवनस्तर भी समृद्ध हुआ। जीवन स्तर बढ़ा तो लोगों की आवश्यकताएँ भी बढ़ीं। अब केवल एक आदमी के कमाने से काम नहीं चलने वाला। अब कृषि भी काफी उन्नत हो चुकी है। कृषि को बढ़ाने के लिए कई सारे तकनीक आ गए हैं।

सोशल मीडिया एक विजुअल वर्ड



- सोनु कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

सोशल मीडिया एक ऐसा विजुअल वर्ड है जो वास्तविक दुनिया से बेहद अलग है। इसकी लोकप्रियता वर्तमान समय में बढ़ती ही जा रही है। सोशल मीडिया ने दुनिया को एक अलग आयाम प्रदान किया है इसलिए सोशल मीडिया हमेशा से चर्चा का विषय बना रहा है। सोशल मीडिया से आज हमारी जिंदगी काफी प्रभावित है इसलिए हम अपने जीवन की छोटी-बड़ी सभी भावनाओं को सोशल मीडिया पर अभिव्यक्त करते हैं। यह हमें अन्य व्यक्तियों से भी जोड़ता है। व्यक्तियों से परिचित होने का यह एक बहुत अच्छा माध्यम है। खासतौर पर भारत में सोशल मीडिया का इस्तेमाल करने वालों की संख्या में बहुत इजाफा हुआ है यदि आज के समय में आप सोशल मीडिया पर आपका एकाउंट नहीं है तो आप पिछड़े हुए समझे जाते हैं। सोशल मीडिया के अनेक फायदे भी हैं, यह हमारी जिंदगी को आसान बनाती है। इसके मदद से हम तत्काल सूचना प्रेषित कर सकते हैं तथा पल भर में फोटो तथा विडियो को साझा कर सकते हैं। दूर बैठे अपने दोस्तों तथा रिश्तेदारों से बातचीत कर सकते हैं। आज वर्डप्रेस जैसी सोशल साइट्स एक आसान प्लेटफॉर्म उपलब्ध करवाती हैं। जिसमें आप कम कीमत में आप अपने विचारों को दुनियाभर के लोगों तक पहुंचा सकते हैं। यह आज प्रत्येक लोगो की जरूरत बन चुका है। कहने को तो आज सोशल मीडिया एक लोकप्रिय साधन बन चुका है पर दूसरी तरफ इसके कई बुरे प्रभाव भी सामने आये हैं। इसे सबसे बड़ी हानि युवाओं को हुई है सोशल मीडिया आज युवाओं की लत बन चुकी है। व्यक्तिगत डेटा का नुकसान जो सुरक्षा मुद्दों को जन्म देता है। पहचान की चोरी तथा बैंक विवरण चोरी जैसे अपराध हैं जो किसी भी व्यक्ति को नुकसान पहुंचा सकता है। सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग आपके शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करता है। लोग अक्सर आलसी, मोटे, तनाव का शिकार होते हैं।

सोशल मीडिया दुनियाभर के लोगों से जुड़ने तथा संबंध बढ़ाने का एक अच्छा साधन है। हालांकि लोगों को यह जानने की जरूरत है कि इसका उपयोग समझदारी से करें ताकि इनसे उनका तथा समाज को कोई नुकसान न हो इसलिए किसी को परेशानी मुक्त अनुभव का आनंद लेने के लिए सोशल मीडिया पर अपनी निजी जानकारी साझा नहीं करनी चाहिए।

मैं, कहता हूँ कि आप अपनी भाषा में बोलें, अपनी भाषा में लिखें। उनको गरज होगी तो वे हमारी बात सुनेंगे। मैं, अपनी बात अपनी भाषा में कहूँगा। जिसको गरज होगी वह सुनेगा। आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करेंगे, तो हिन्दी भाषा का दर्जा बढ़ेगा।

- महात्मा गांधी

पिता पर खूबसूरत कविता



- श्री शौर्य मिश्र
पुत्र - श्री विनोद कुमार
हिन्दी प्राध्यापक
हिन्दी शिक्षण योजना, शिलांग

पिता एक उम्मीद है, एक आस है,
परिवार की हिम्मत और विश्वास है,
बाहर से सख्त अंदर से नर्म है ।

पिता संघर्ष की आँधियों में हौसलों की दीवार है,
परेशानियों से लड़ने को दो धारी तलवार है,
बचपन में खुश करने वाला खिलौना है ।
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला बिछौना है ।

पिता जिम्मेदारी से लदी हुई गाड़ी का सारथी है,
सबको बराबर का हक दिलाता, यही एक महारथी है,
सपनों को पूरा करने में लगने वाली जान है ।

पिता जमीर है, पिता जागीर है,
जिसके पास ये है, वह सबसे अमीर है ।

एक कविता हर माँ के नाम



- सुश्री स्निग्धा मिश्र
पुत्री - श्री विनोद कुमार
हिन्दी प्राध्यापक
हिन्दी शिक्षण योजना, शिलांग

घुटनों पर रेंगते-रेंगते,
कब पैरों पर खड़ी हुई ।
तेरी ममता की छाँव में,
न जाने कब मैं बड़ी हुई ।

काला टीका, दूध मलाई,
आज भी सब कुछ वैसा है ।
मैं ही, मैं हूँ हर जगह,
प्यार ये तेरा कैसा है ?

सीधी-सादी, भोली-भाली,
मैं ही सबसे अच्छी हूँ ।
कितनी भी हो जाऊँ बड़ी,
“माँ !” मैं, आज भी तेरी बच्ची हूँ ।

चिड़िया रानी

चिड़िया रानी, चिड़िया रानी,
तुम हो पेड़ों की रानी ।
सुबह-सवेरे उठ जाती हो,
न जाने क्या गाती हो ।

क्या तुम भी पढ़ने जाती हो ?
या नोकरी करने को जाती हो ?
शाम से पहले आती हो,
बच्चों के लिए दाना लाती हो ।

भर-भर चोंच खिलाती दाना,
चूँ-चूँ चहक सुनाती हो गाना ।



- श्रीमती अनिमा क्षेत्री
पत्नी - श्री दिलीप कुमार क्षेत्री
एम.टी.एस.

अंजाम



- सुश्री विद्या भारती
बहन - श्री दीपक कुमार
एम.टी.एस.

सप्ताह यू ही बीत गया। आज भी समर का कोई अता-पता नहीं था। किसी ने कहा - “अरे वह दिल्ली-सुरत कहीं चला गया होगा।” गाँव में अक्सर जवान होते बच्चे शहरों की ओर पलायन का सपना देखते ही हैं। पिछले कई सालों में बुधन, रामानुज जैसे कईयो ने अहमदाबाद, सुरत के चक्कर लगा चुके थे।

कई तो पढ़ाई से छुटकारा पाने के लिए तो कई पैसे कमाने के मजबूरी के चले गए थे। समर तो अच्छे-खासे परिवार से था। पास के कस्बे के प्राइवेट स्कूल में पढ़ता था, पर उसके दोस्तों को लेकर उसके घर वाले बहुत परेशान रहते थे। गाँव में शराब-गाँजे जैसे नशा का प्रभाव अधिक था। बूढ़े-जवान के साथ-साथ बच्चे भी इसके प्रभाव में आ गए थे। कई किशोरावस्था में आते ही खुलेआम पीते थे। समर के दोस्तों में भी हर कोई इसके आदि हो गए थे। उनके साथ उठने-बैठने का परिणाम या निकला कि गाँजा के नशे का लत उसको भी लग गया था। कई बार पिताजी से मार-फटकार भी पड़ी, पर उसपर कोई असर नहीं हुआ। उसके पिता रामाधार बाबू उसको पढ़ने के लिए शहर भेजना चाहते थे पर, उसका तो पढ़ाई में मन ही नहीं लगता था।

समर का दोस्त रमन तो पिछले महीने ही सुरत के कढ़ाई फैक्टरी में काम करने के लिए चला गया था। वहाँ के बारे में कई स्वप्नील बातें उसने समर को बताए थे। कई दिनों के खोजबीन के बाद भी उसका पता नहीं लग रहा था। परिवार के कई लोगों के मतभेद के वजह से पुलिस थाना में मुकदमा दर्ज नहीं हो पाया था। समर की माँ शुरूआती दो-तीन दिन तो रो-रो कर उनका बुरा हाल हो गया था। परन्तु अब मायूस होकर वह घर के कामों में ही व्यस्त हो गई थी।

दिल्ली में समर के मामा जी रहते थे, जिनका वहाँ कपड़ों का व्यवसाय था। उनके मामाजी ने ही खबर दी कि समर दिल्ली में है। उन्होंने बताया कि वह वहाँ पेपर के रद्दी के कारखाने में काम करने लगा है। कुछ महीने बीतने के बाद एक दिन दिल्ली के महारौली थाने से पुलिस ने समर के पिताजी को फोन आया कि उसके बेटे को महारौली थाने में रखा गया है क्योंकि समर गाँजा-कोकीन के तस्करी में पकड़ा गया था।

समर जिस कारखाने में कार्यरत था उसी कारखाने का एक साथी उसको रुपये-पैसे का लालच देकर उसे नशीले पदार्थों की तस्करी में उतार दिया था। समर को नशे के आवश्यक सामग्री के अलावा ज्यादा पैसे भी मिल जाते थे। परन्तु एक दिन वह पकड़ा गया। यह खबर सुनकर उसके पिता गाँव में काफी परेशान हो गए थे। पहले तो गुस्से में उन्होंने कोई पैरवी करने की बात नहीं की। मगर, समर की माँ ने काफी दबाव देकर उनको दिल्ली भेजा। वह मुश्किल से अपने बेटे को बचाने को राजी हुए। परन्तु पुलिस ने समर को पकड़ कर तथा सजा देने के पश्चात उसे बाल सुधार गृह भेज दिया था। वहाँ जब समर अपने पिता से मिले तब उसे पश्चताप अनुभव हुआ। समर ने अपने पिता को वचन दिया कि सजा खत्म होने के पश्चात वह भविष्य में कभी भी नशा का सेवन नहीं करेगा।

पुस्तक



- श्री रोहित थापा
पुत्र - श्री नेत्र बहादुर थापा
एम.टी.एस.

पुस्तक हमारे जीवन के आधार होते हैं और हर व्यक्ति को जीवन के किसी न किसी मोड़ पर इनको साथी आवश्यक बनाना पड़ता है। पुस्तक हमारे सच्चे दोस्त होते हैं जिनके रहते जीवन को एक सही दिशा मिलती है। कभी-कभी तो ये हमारे पक्के दोस्त भी होते हैं, जो हमें वर्णमाला से लेकर जीवन के कठिन सवाल तक के जवाब बड़े आसानी से दे देते हैं।

पुस्तकों का उपयोग -

पुस्तक बच्चों से लेकर बड़ों तक सब के लिये महत्वपूर्ण होते हैं। बच्चे अपनी प्रारंभिक शिक्षा पुस्तकों के माध्यम से लेते हैं तो वहीं बुजुर्ग उसे अपने मनोरंजन के साधन के रूप में या धार्मिक कार्यों की पूर्ति हेतु करते हैं। अर्थात् वे हर क्षेत्र और उम्र में जरूरी होते हैं। आज कल पुस्तक कई प्रकार के मिलने लगे हैं, जैसे की ऑनलाइन और ऑफलाइन। वे पुस्तक जिन्हें आप अपने इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों पर पढ़ सकते हैं, वे ऑनलाइन वाले होते हैं। ये बहुत ही बेहतरीन होते हैं और इनको आप आराम से अपने फोन या लैपटॉप में पढ़ सकते हैं। इन्हें कहीं भी ले जाना बड़ा आसान होता है और फटने और कीड़े लगने से सुरक्षित भी रखा जा सकता है। दूसरे होते हैं मुद्रित यानी ऑफलाइन। ऐसे पुस्तक जो हम अपने स्कूलों और घरों में अक्सर देखते हैं, जो कागज के बने होते हैं। इनके भी अपने फायदे हैं जैसे की कभी कोई निशान लगाना हुआ तो लोग पढ़ते-पढ़ते इनपर निशान भी लगा लेते हैं और कुछ लिख भी सकते हैं। कई लोग इसे पढ़ना पसंद करते हैं तो कुछ ऑनलाइन पुस्तकों को।

पुस्तकों का जीवन पर पड़ने वाला प्रभाव -

पुस्तकें ज्ञान का भंडार होते हैं और इनका साथ आपके जीवन में कई परिवर्तन ला सकता है। बच्चों के लिए उनसे संबंधित, बड़ों के लिए उनसे संबंधित। एक पुस्तक कभी आपको धोका नहीं देता और सदैव आपके ज्ञान को बढ़ाता ही है। आप इसमें रोचक कहानियाँ, देश-दुनिया में होने वाली गतिविधियाँ, कुछ नया सीखने का तरीका इत्यादि आसानी से सीख सकते हैं। पुस्तक पढ़ना एक अच्छी आदत है और हम सबको इन्हें अवश्य पढ़ना चाहिए। हमारे इतिहास में कई महापुरुष रहे हैं और उनके वक्तव्य और ज्ञान भरी बातों को हम आसानी से पुस्तकों में पढ़ सकते हैं। जैसे कि गांधीजी, जो भले आज हमारे बीच नहीं हैं लेकिन उनकी विचार धारा अभी भी जिन्दा है।

अतः पुस्तकों की उपयोगिता हमारे जीवन में बहुत अधिक है। वे हर क्षेत्र में हमारा मार्गदर्शन करती हैं और बदले में हमसे कुछ लेती भी नहीं है। पहले के जमाने में पुस्तक नहीं हुआ करते थे और गुरुजी बच्चों को सब कंठस्थ कराया करते थे। परंतु पुस्तक के आविष्कार के बाद लोग पुस्तकों के माध्यम से ज्ञान का हस्तांतरण एक युग से दूसरे युग में करने लगे। पुस्तकों के आविष्कार के कारण ही हम अपने इतिहास को जान पाए। शायद शब्द कम पड़ जाएँ लेकिन उनकी उपयोगिता कभी कम नहीं होगी।

महिलाओं की समाज में भूमिका



- श्रीमती रोज बेगम
माँ - मुहम्मद जियाऊल हक
वरिष्ठ अनुवादक

हमारे समाज में महिला अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक एक अहम किरदार निभाती आई है। अपनी सभी भूमिकाओं में निपुणता दर्शाने के बावजूद आज के आधुनिक युग में महिलाएं पुरुष से पीछे खड़ी दिखाई देती हैं। पुरुष प्रधान समाज में महिला की योग्यता को पुरुष से कम आंका जाता है। सरकार द्वारा जागरूकता फैलाने वाले कई कार्यक्रम चलाने के बावजूद भी महिलाओं की जिंदगी पुरुष की जिंदगी के मुकाबले काफी जटिल हो गयी है। महिला को अपनी जिंदगी का ख्याल तो रखना ही पड़ता है, साथ में पूरे परिवार का ध्यान भी रखना पड़ता है। वह पूरी जिंदगी बेटी, बहन, पत्नी, माँ, साँस और दादी जैसे रिश्तों को ईमानदारी से निभाती है। इन सभी रिश्तों को निभाने के बाद भी वह पूरी शक्ति से नौकरी करती है ताकि अपना परिवार का और देश का भविष्य उज्ज्वल बना सके।

अगर हम महिलाओं की आज की अवस्था को पौराणिक समाज की स्थिति से तुलना करें तो यह साफ दिखता है कि हालात में कुछ तो सुधार हुआ है। महिलाएं नौकरी करने लगी हैं। घर के खर्चों में योगदान देने लगी हैं। कई क्षेत्रों में तो महिला पुरुषों से आगे निकल गई हैं। दिन-प्रतिदिन लड़कियां ऐसे-ऐसे कीर्तिमान बना रही हैं जिस पर न सिर्फ परिवार या समाज को बल्कि पूरा देश गर्व महसूस कर रहा है। महिलाओं के उत्थान में भारत सरकार भी पीछे नहीं है। बीते कुछ सालों में सरकार द्वारा अनगिनत योजनाएँ चलाई गयी हैं जो महिलाओं को सामाजिक बेड़ियाँ तोड़ने में मदद कर रही हैं एवं साथ ही साथ उन्हें आगे बढ़ने में प्रेरित कर रही हैं। सरकार ने पुराने वक्त के प्रचलनों को बंद करने के साथ-साथ उन पर कानूनन रोक लगा दी है। जिनमें मुख्य थे बाल विवाह, भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, बाल मजदूरी, घरेलू हिंसा इत्यादि। इन सभी को कानूनी रूप से प्रतिबंध लगाने के बाद समाज में महिलाओं की स्थिति में काफी सुधार आया है। महिला अपनी पूरी जिंदगी अलग-अलग रिश्तों में खुद को बाँधकर दूसरों की भलाई के लिए काम करती है।

महिलाएं समाज के विकास एवं तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उनके बिना विकसित तथा समृद्ध समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। ब्रिघम यंग का एक प्रसिद्ध कहावत है - 'अगर आप एक आदमी को शिक्षित कर रहे हैं तो आप सिर्फ एक आदमी को शिक्षित कर रहे हैं पर अगर आप एक महिला को शिक्षित कर रहे हैं तो आप आने वाली पूरी पीढ़ी को शिक्षित कर रहे हैं।' समाज के विकास के लिए यह बेहद जरूरी है कि लड़कियों को शिक्षा में किसी तरह की कमी न आने दे क्योंकि

उन्हें ही आने वाले समय में लड़कों के साथ समाज को एक नई दिशा देनी है । ब्रिघम यंग की बात को अगर सच माना जाए तो उस हिसाब से अगर कोई आदमी शिक्षित होगा तो वह सिर्फ अपना विकास कर पायेगा पर वहीं अगर कोई महिला सही शिक्षा हासिल करती है तो वह अपने साथ-साथ पूरे समाज को बदलने की ताकत रखती है ।

महिलाओं के बिना मनुष्य जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती । इसे पागलपन ही कहा जाएगा कि उनकी प्रतिभा को सिर्फ इसी तर्क पर नजर अंदाज कर दिया जाए कि वे मर्द से कम ताकतवर तथा कम गुणवान है । भारत की लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलाएं करती है । अगर उनकी क्षमता पर ध्यान नहीं दिया गया तो इसका साफ-साफ मतलब है देश की आधी जनसंख्या अशिक्षित रह जाएगी और अगर महिलाएं ही पढ़ी-लिखी नहीं होगी तो वह देश कभी प्रगति नहीं कर पाएगा । हमें यह बात समझनी होगी की अगर एक महिला अनपढ़ होते हुए भी घर इतना अच्छा संभाल लेती है तो पढ़ी-लिखी महिला समाज और देश को कितनी अच्छी तरह से संभाल लेगी ।

महिलाएं परिवार बनाती है तथा परिवार से घर बनता है और घर से समाज बनता है एवं समाज ही देश को बनाता है । इसका सीधा-सीधा अर्थ यही है कि महिला का योगदान हर जगह है । महिला की क्षमता को नजर अंदाज करके समाज की कल्पना करना व्यर्थ है । शिक्षा और महिला शसक्तिकरण के बिना परिवार, समाज और देश का विकास नहीं हो सकता । महिला यह जानती है कि उसे कब और किस तरह से मुसीबतों से निपटना है । जरूरत है तो बस उसके सपनों को आजादी देने की ।

पहले महिलाओं की दशा दासियों से भी बदतर थी । अगर कोई महिला लड़की को जन्म देती तो उसे या तो मार दिया जाता था या उसे घर के सदस्यों द्वारा पीटा जाता था । लड़की को जन्म देना पाप माना जाता था । उनसे सिर्फ यही अपेक्षा की जाती थी कि वे लड़के को ही जन्म दे। पर बदलते वक्त के साथ हालात बदलते गए । अब लोग पहले से ज्यादा जागरूक है और महिलाओं कि मदद करने के लिए आगे आने लगे है । अभी भी इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

मैं, कहता हूँ कि आप अपनी भाषा में बोलें, अपनी भाषा में लिखें । उनको गरज होगी तो वे हमारी बात सुनेंगे । मैं, अपनी बात अपनी भाषा में कहूँगा । जिसको गरज होगी वह सुनेगा । आप इस प्रतिज्ञा के साथ काम करेंगे, तो हिन्दी भाषा का दर्जा बढ़ेगा ।

- महात्मा गांधी

मेरी चेरापूंजी यात्रा



- श्री विनोद कुमार
हिन्दी प्राध्यापक
हिन्दी शिक्षण योजना, शिलांग

जैसा कि सबको ज्ञात है कि चेरापूंजी जाने के लिए जून माह का समय सबसे अच्छा माना जाता है, क्योंकि इस समय बारिश आरंभ ही हुई होती है इसलिए समस्याएं कम होती हैं। जुलाई और अगस्त में जाने पर बारिश इतनी ज्यादा होती है कि वहां घूमना बहुत मुश्किल हो जाता है, साथ ही आप वाटर फॉल्स (झरने या जलप्रपात) में पानी का बहाव भयंकर होने से उसमें न नहा सकते हैं और न ही कोई मस्ती कर सकते हैं। इसी क्रम में दिनांक 22/06/2019 को हम छः लोगों के समूह में बाइक से शिलांग से चेरापूंजी (सोहरा) के लिए अपनी मस्ती में झूमते गाते हुए निकल पड़े।

शिलांग में लगभग दो साल रहने पर इतना तो अनुभव हो ही गया था कि छाता, रेनकोट और स्वेटर या जैकेट के बिना आपको किसी भी कीमत पर बाहर नहीं निकलना है। स्वेटर, जैकेट और रेनकोट इसलिए बता रहा हूं क्योंकि यहां का मौसम जून में भी थोड़ा ठंडा रहता है, और जब चेरापूंजी बाइक से जा रहे हों तब तो ऐसी गलती कदापि न करें। अतः मैंने रेनकोट, छाता, दो लीटर पानी और खाना बैग में रख लिया। खाना भी रखना इसलिए जरूरी था क्योंकि वहां रास्ते में होटल और रेस्टोरेंट बहुत कम हैं, और जो हैं भी वो अधिकतर मांसाहारी हैं, और मैं ठहरा शुद्ध शाकाहारी। शिलांग से लगभग 57 कि.मी. की दूरी दो घंटे में पूरी करते हुए, पहाड़ों और बादलों के बीच से गुजरते हुए भीगते-भागते आखिरकार हम सब चेरापूंजी पहुंच गए। आपको बताते चलें कि जब आप बारिश के दिनों में चेरापूंजी जाते हैं तो रास्ते में बादल आपको घेर लेते हैं, पूरा रास्ता कोहरे जैसा भरा रहता है, दृश्यता (विजिबिलिटी) बहुत कम रहती है और वे बादल पानी से भरे होते हैं जोकि आपको जमकर भिगा देते हैं। अतः रास्ते में हम लोगों को रेनकोट भी पहनना पड़ा।

यदि आप टूरिस्ट टैक्सी और गाइड के साथ चेरापूंजी जाते हैं तो सामान्यतः टूरिस्ट टैक्सी और गाइड अपना समय बचाने के लिए आपको सड़क के किनारे के दो चार वाटर फॉल्स दिखाकर शाम तक वापस शिलांग छोड़ देते हैं। लेकिन मैं, आज ऐसे मित्र के साथ था जिसका काम नई-नई जगह एक्सप्लोर करना है। हमारे मित्र महोदय हमसे पहले कई बार चेरापूंजी बाइक से जा चुके थे इसलिए कॉमन जगहों और फॉल्स को देख ही चुके थे। अतः आज अवसर था कुछ नया, थ्रिलिंग और एडवेंचरस करने का। सो हम मस्तों का टोली तैयार थी, नया और कुछ खतरनाक करने के लिए। हम सबने प्लान बनाया कि आज एक ऐसा नया झरना ढूंढेंगे जहां मेघालय के लोग भी कम ही पहुंच पाते हैं। शायद इसीलिए शिलांग

के लोगों को भी वहां का कोई विशेष आइडिया नहीं था।

अतः हम लोगों ने गूगल का सहारा लेते हुए झरना ढूँढना आरंभ कर दिया। अंततः गूगल महोदय ने एक झरना दिखाया जिस तक पहुंचने का रास्ता बहुत ही पथरीला, निर्जन और दुर्गम था। अतः मुख्य रास्ते से झरने तक 5 किमी की दूरी भी हम लोगों ने बाइक से आधा घंटे में तय कर पाई। अब बारी थी बाइक और स्कूटी को छोड़कर पैदल ट्रेकिंग करने की। सो हम लोग बाइक छोड़कर पैदल निकल पड़े, और लगभग दो कि.मी. उस दुर्गम जंगल, ऊंचे नीचे पहाड़, दल-दल भरे रास्ते (दरअसल कोई रास्ता था ही नहीं रास्ते को हम लोग खुद बना रहे थे) से झरने तक पहुंचना बड़ा ही खतरों से भरा और साहसिक काम था।

जब एक घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद झरना नजर आया तब उस तक पहुंचने के लिए लगभग 600 से 700 फिट नीचे उतरना था जिसके लिए कोई रास्ता नहीं था, बस घास में झूलकर, लटककर कैसे भी जान हथेली पर रखकर पहुंचना था। अब मुझे लगने लगा कि वहां पहुंचना बहुत मुश्किल होगा। कई साथी तो कहने लगे कि ऊपर से ही फोटो खींचकर लौट चलो लेकिन कुछ लोग कहां मानने वाले थे। आखिर में जीत न मानने वालों की हुई। अतएव, हिम्मत जुटा कर हम लोग नीचे उतरने लगे। नीचे भी सीधे आपको नदी में उतरना है, फिर उस नदी को पार करके झरने तक पहुंच सकते हैं। छः लोग थे जिनमें दो लोगों को तैरना नहीं आता था, उन्हीं दो दुर्भाग्यशाली लोगों में मैं भी एक था।

अब मुझे पूरा विश्वास होने लगा था कि इतनी मेहनत बेकार चली जाएगी। लेकिन, जब तैरने वाले लोग उतरे तब पता चला कि नदी में पानी छाती के बराबर ही है। अतः यह देखते ही मुझे अचानक इतनी खुशी मिली कि जैसे मुझे भी स्वर्ग में प्रवेश करने का स्वर्णिम अवसर मिल गया हो। झरने के पास पहुंचने पर मेरी आंखें फटी की फटी रह गईं। मुझे विश्वास नहीं हो पा रहा था कि भारत में भी इतनी सुंदर जगह हो सकती है। अंततः मुझे समझ आया कि मेघालय को यूं ही “पूर्व का स्कॉटलैंड” नहीं कहा जाता। प्रकृति की ऐसी अप्रतिम सुंदरता इससे पहले मैंने कभी नहीं देखी थी। लोग विदेशों की सुंदरता का उदाहरण देकर तुलना करते हुए कहते हैं कि मेघालय “पूर्व का स्कॉटलैंड” है लेकिन, मैं तो कहूंगा कि स्कॉटलैंड हमारे मेघालय (भारत) जैसा है। इस झरने का नाम “मावसावा वाटर फॉल्स” था। मिनरल वॉटर से भी साफ पानी और झरने की भयंकर गरगराहट हम सभी को मंत्र मुग्ध कर रही थी। ऐसा लग रहा था कि प्रकृति ने यहां एकांत में बैठकर सुंदरता उड़ेल दी हो। फिर हम लोगों ने तीन चार घंटे तक जमकर मस्ती की और खूब नहाया। तीन-चार घंटे का समय अचानक कैसे बीत गया हम सब जान ही नहीं पाए। शाम के चार बजने वाले थे। अतः हम सबको घर भी निकलना था। रास्ते में “मावसावा वाटर फॉल्स” के आसपास ही “डेंथेलिन वाटर फॉल्स” है, जिसे भी हम लोगों ने देखा और शाम को शिलांग वापस पहुंचे।

यह यात्रा मेरे जीवन की एक यादगार यात्रा रही है।



श्री पुरुषोत्तम गिरि, कनिष्ठ अनुवादक, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करते हुए ।



हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर कार्यक्रम का आनंद लेते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करती हुई ।



श्री अथिखो चलाई, प्रधान महालेखाकार, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए ।



श्री फेडेरिक सिएमलेह, प्रधान निदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए ।



श्री बेंजामिन करुणाकरण, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलित करते हुए ।





श्री बिनोद भुजेल, सचिव एवं कल्याण अधिकारी, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए ।



श्री अथिखो चलाई, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा) और श्री फेडेरिक सिपमलेह, प्रधान निदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) तथा कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग की वार्षिक हिन्दी पत्रिका "पूर्वाशा" और "नवीन पूर्वाचल संदेश" के लोकार्पण की एक झलक ।



मुहम्मद जियाउल हक, वरिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर गृह मंत्री, भारत सरकार का संदेश पाठ करते हुए ।



हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर कार्यक्रम का आनंद लेते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।



श्री अथिखो चलाई, प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करती हुई श्रीमती लालमुनहुवलाई थिएले, वरिष्ठ लेखापरीक्षक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग ।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करती हुई सुश्री लानाफिका लिंगडोह, आशुलिपिक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग ।



श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री कृष्णा जोशी, एम.टी.एस., कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग।



श्री फेडेरिक सिएमलेह, प्रधान निदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सुरेन्द्र कुमार, आशुलिपिक, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग।



श्री आनंद कौशल, वरिष्ठ लेखा अधिकारी, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग द्वारा हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर धन्यवाद ज्ञापित करते हुए।



हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर कार्यक्रम के समापन समारोह में राष्ट्र गान प्रस्तुत करते हुए तीनों कार्यालयों के अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण।



हिन्दी दिवस 2020 के अवसर पर कार्यक्रम के समापन समारोह के उपरांत दोनों कार्यालयों के हिन्दी स्टाफ की एक झलक।





श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा दिनांक 11-03-2021 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित करते हुए ।



दिनांक 11-03-2021 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में ध्यानमग्न अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।



दिनांक 11-03-2021 को आयोजित हिन्दी कार्यशाला में ली गई अधिकारीगण एवं कर्मचारीगणों के सामूहिक छायाचित्र की एक झलक ।





श्री अनिल कुमार, निदेशक (कार्मिक), नीपको, शिलांग द्वारा दिनांक 02-12-2019 से 06-12-2019 तक नीपको, शिलांग में आयोजित “कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण” कार्यक्रम के अवसर पर स्वागत भाषण देते हुए ।



श्री अनिल कुमार, निदेशक (कार्मिक), नीपको, शिलांग के करकमलों द्वारा नीपको, शिलांग में आयोजित “कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण” कार्यक्रम के अवसर पर दिनांक 02-12-2019 को हैंड बैग प्राप्त करती हुई प्रशिक्षार्थी ।



श्री बिनोद कुमार, हिन्दी प्राध्यापक, हिन्दी शिक्षण योजना, शिलांग केन्द्र और मुहम्मद जियाउल हक, वरिष्ठ अनुवादक, कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग द्वारा दिनांक 02-12-2019 से 06-12-2019 तक नीपको, शिलांग में आयोजित “कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण” कार्यक्रम के अवसर पर प्रशिक्षण देते हुए ।



दिनांक 02-12-2019 से 06-12-2019 तक नीपको, शिलांग में आयोजित “कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण” कार्यक्रम के अवसर पर लिए गए सामूहिक छायाचित्र की एक झलक ।





श्री शेखर दे, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, शिलांग दिनांक 02-12-2019 से 06-12-2019 तक नीपको, शिलांग में आयोजित “कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण” कार्यक्रम में कंप्यूटर का प्रशिक्षण देते हुए ।



दिनांक 02-12-2019 से 06-12-2019 तक नीपको, शिलांग में आयोजित “कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण” कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षार्थियों द्वारा मध्याह्न भोजन ग्रहण करने की एक झलक ।



श्री अनिल कुमार, निदेशक (कार्मिक), नीपको, शिलांग के करकमलों द्वारा नीपको, शिलांग में आयोजित “कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण” कार्यक्रम के उपरांत दिनांक 06-12-2019 को प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए प्रशिक्षार्थीगण ।



दिनांक 02-12-2019 से 06-12-2019 तक नीपको, शिलांग में आयोजित “कंप्यूटर पर हिन्दी में काम करने के लिए बेसिक प्रशिक्षण” कार्यक्रम के अवसर पर लिया गया सामूहिक छायाचित्र ।





दिनांक 23/09/2021 को लिंडहर्स्ट एस्टेट, लाइटुमखरा, शिलांग के स्क्वाश कोर्ट में श्री बंटीडोर लिंगडोह, माननीय मंत्री, खेल एवं युवा मामले, मेघालय सरकार एवं श्री ए.डब्ल्यू.के. लांग्स्टे (आई.ए. एण्ड ए.एस.), सेवानिवृत्त उप नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक, भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग स्क्वाश का खेल खेलते हुए ।



स्क्वाश खेल का आनंद लेते हुए अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण ।



स्क्वाश खेल के उपरांत जलपान करते हुए अधिकारीगण ।





श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा गणतंत्र दिवस 2021 के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



श्री अथिखो चलाई, महानिदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा गणतंत्र दिवस 2021 के अवसर पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराया गया ।



श्री अथिखो चलाई, महानिदेशक, क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग, गणतंत्र दिवस 2021 के अवसर पर क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग के परिसर में तिरंगे को सलामी देते हुए ।





श्री काहोटो जे. येपथोमी, वरिष्ठ उप महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2021 के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराने की एक झलक ।



श्री फेडेरिक सिएमलेह, महालेखाकार, कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा स्वतंत्रता दिवस 2021 के अवसर पर कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग के परिसर में झंडा फहराने की एक झलक ।



लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग के परिसर में स्वतंत्रता दिवस 2021 के अवसर पर झंडा फहराने के उपरांत अधिकारियों, कर्मचारियों, बच्चों इत्यादि द्वारा राष्ट्रगान प्रस्तुत करने की एक झलक ।





सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 15/07/2021 को आयोजित कोविड-19 वैक्सीन कार्यक्रम के दौरान कोविशील्ड टीके की दूसरी खुराक लेते हुए श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग ।

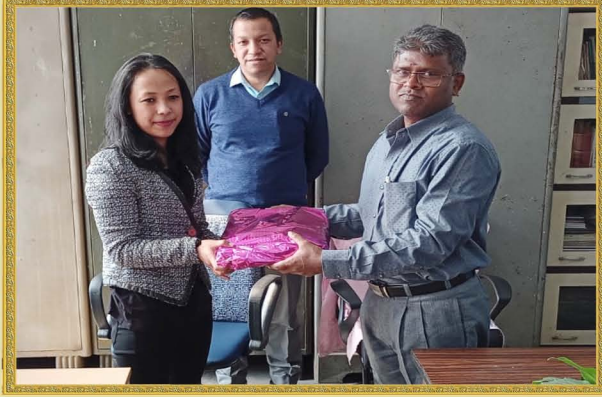


सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 15/07/2021 को आयोजित कोविड-19 वैक्सीन कार्यक्रम के दौरान कोविशील्ड टीके की दूसरी खुराक लेते हुए मुहम्मद जियाउल हक, वरिष्ठ अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग।



सिविल ऑडिट स्पोर्ट्स एण्ड कल्चरल क्लब में दिनांक 15/07/2021 को आयोजित कोविड-19 वैक्सीन (दूसरी खुराक) कार्यक्रम के समापन के उपरांत कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के कार्यकर्ता एवं कोविड-19 टीकाकरण की चिकित्सा विभाग की टीम ।





श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (ले.प.), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा दिनांक 26/02/2021 को प्रशासन अनुभाग में आयोजित अपने विदाई समारोह के अवसर पर भेंट प्राप्त करती हुई सुश्री अमण्डा डब्ल्यू. लिंस्कोर, कनिष्ठ अनुवादक एवं इस अवसर पर श्री पी.आर. रिंग्ख्लेम, स्थापना अधिकारी उपस्थित स्टाफ को संबोधित करते हुए ।



सुश्री अमण्डा डब्ल्यू. लिंस्कोर, कनिष्ठ अनुवादक के विदाई समारोह के अवसर पर हिन्दी स्टाफ के साथ छायाचित्र ।



सुश्री अमण्डा डब्ल्यू. लिंस्कोर, कनिष्ठ अनुवादक के विदाई समारोह के अवसर पर प्रशासन स्टाफ की सामूहिक छायाचित्र ।





श्री वेंकटेश जिनुकाला, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन) दिनांक 23/09/2021 को प्रशासन अनुभाग में आयोजित श्रीमती दर्दमाली ब्रह्मा, कनिष्ठ अनुवादक के विदाई समारोह के अवसर पर समारोह में उपस्थित स्टाफ को संबोधित करते हुए ।



श्री सुब्बैया, उप महालेखाकार (प्रशासन), कार्यालय महालेखाकार (ले.प.), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा दिनांक 23/09/2021 को प्रशासन अनुभाग में आयोजित अपने विदाई समारोह के अवसर पर भेंट प्राप्त करती हुई श्रीमती दर्दमाली ब्रह्मा, कनिष्ठ अनुवादक।



श्रीमती दर्दमाली ब्रह्मा, कनिष्ठ अनुवादक के विदाई समारोह के अवसर पर समूह अधिकारियों एवं शाखा अधिकारी के साथ प्रशासन स्टाफ की सामूहिक छायाचित्र ।



मैं, बयाँ नहीं कर सकता



- श्री सुप्रीय मंडल
लेखापरीक्षक

सच्ची आँखे खुबसूरत नाक,
ठूड़ी में तिल सीधी बात ।
प्रफुल्लित चेहरा, पुलकित मन,
हँसी-खुशी हमेशा संग ।
हरकतों में झूमते है बच्चे,
दादी सी समझदारी है ।
मैं, बयाँ नहीं कर सकता,
आप कितनी प्यारी है ।

मासूम मन कोमल हाथ,
हर कोई उसे चाहे साथ ।
बर्ताव उनका इतना प्यारा,
हारे दिल सब बेचारा ।
परछाई सी लिपटी अपनापन,
अनमोल उसकी यारी है ।
मैं, बयाँ नहीं कर सकता,
आप कितनी प्यारी है ।

सजीव निर्जीव जो भी आएँ,
दूर जाके चौन न पाएँ ।
सब खिलते जब वो होते,
बिरहा में सब मुरझा जाते ।
जितना भी मैं, मिलु उसे,
तो भी लगती अधूरी है ।
मैं, बयाँ नहीं कर सकता,
आप कितनी प्यारी है ।

सासों में है बहती सुकून,
हँसी में गूँजती प्रेम धुन ।
बातों से है बरसती प्यार,
कदमों के साथ चलती बहार ।
तन से लेकर मन के अन्दर,
वो फूलों की ही क्यारी है ।
मैं, बयाँ नहीं कर सकता,
आप कितनी प्यारी है ।

यूँहि आसान नहीं होता



- श्रीमती कमला मंडल
माँ - श्री सुप्रीय मंडल
लेखापरीक्षक

यूँहि आसान नहीं होता,
सपने अधूरा छोड़ जाना ।
कुछ करेंगे अच्छा अब,
कहकर आगे बढ़ जाना ।

विश्वास है मेहनत पर,
करेंगे वो मुकाम हासिल ।
जिनके लिए कीमत मैंने,
चुकाई हैं तिल-तिल ।

हौसला न कम होगा,
अड़े है हम इरादों पर ।
फौलाद बनकर लौटेंगे,
चुनौती को ताकत बनाकर ।

मकसद अगर सच्ची है,
तो डरें क्यों हम तानों से ।
अटूट मेहनत के बल पर,
लड़ जाएँगे तूफानों से ।

समय की ये फरमाइश है,
हमें धीरज रखना है ।
सही वक्त की चोटी पर,
विजय बिगुल बजाना है ।

जो छुट गया वो छोटी न थी,
पर उससे भी बड़ा पाना हैं ।
सिर पर ताज होगा वहीं,
चाहत में जिसकी जमाना है ।

लड़कियों की शिक्षा



- श्री सुमित दास
पुत्र - श्री सुजीत कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

शिक्षा जीवन जीने का एक अनिवार्य हिस्सा है, चाहे वह लड़का हो या लड़की हो। महिला के अधिकारों की रक्षा में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह लिंग के आधार पर भेदभाव को रोकने में भी मदद करती है। शिक्षा महिलाओं को जीवन के मार्ग को चुनने का अधिकार देने का पहला कदम है जिस पर वह आगे बढ़ती है। एक शिक्षित महिला में कौशल, सूचना, प्रतिभा और आत्मविश्वास होता है, जो उसे एक बेहतर मां, कर्मचारी और देश का निवासी बनाती है। महिलाएं हमारे देश की आबादी का लगभग आधा हिस्सा हैं। पुरुष और महिलाएं एक सिक्का के दो पहलुओं की तरह हैं और उन्हें देश के विकास में योगदान करने के समान अवसर की आवश्यकता होती है।

पहले समय में लड़कियों की शिक्षा को कभी भी आवश्यक नहीं माना गया था लेकिन समय गुजरने के साथ लोगों ने लड़कियों की शिक्षा का महत्व महसूस किया है। यह अब आधुनिक युग में लड़कियों के प्रोत्साहन के रूप में माना जाता है। अब महिलाएं जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रही हैं, लेकिन फिर भी कुछ ऐसे लोग हैं जो लड़कियों की शिक्षा का विरोध करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि लड़की का काम घर तक सीमित है और उन्हें लगता है कि लड़कियों की शिक्षा पर खर्च करना व्यर्थ करना है। यह विचार गलत है क्योंकि लड़कियों की शिक्षा समाज को बेहतर बना सकती है।

लड़कियों की शिक्षा में कई फायदे हैं। एक सुशिक्षित और सुशोभित लड़की देश के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। एक शिक्षित लड़की विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों के काम और बोझ को साझा कर सकती है। एक शिक्षित लड़की की अगर कम उम्र में शादी नहीं की गई तो वह लेखक, शिक्षक, वकील, डॉक्टर और वैज्ञानिक के रूप में देश की सेवा कर सकती हैं। इसके अलावा वह अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी बहुत अच्छी तरह से प्रदर्शन कर सकती है।

आर्थिक संकट के इस युग में लड़कियों के लिए शिक्षा एक वरदान है। आज के समय में एक मध्यवर्गीय परिवार की जरूरतों को पूरा करना वास्तव में कठिन है। शादी के बाद अगर एक शिक्षित लड़की काम करती है तो वह अपने पति के साथ परिवार के खर्चों को पूरा करने में मदद कर सकती है। अगर किसी महिला के पति की मृत्यु हो जाती है तो वह काम करके पैसा कमा सकती है। शिक्षा महिलाओं के सोच के दायरे को भी बढ़ाती है जिससे वह अपने बच्चों की परवरिश अच्छे से कर सकती है। इससे वह यह भी तय कर सकती है कि उसके और उसके परिवार के लिए क्या सबसे अच्छा है। शिक्षा एक लड़की को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनने में मदद करती है ताकि वह अपने अधिकारों और महिलाओं के सशक्तिकरण को पहचान सके जिससे उसे लिंग असमानता की समस्या से लड़ने में मदद मिले। किसी भी राष्ट्र का सुधार लड़कियों की शिक्षा पर निर्भर करता है। इसलिए लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

कंप्यूटर



- श्रीमती अरुणा थापा
पत्नी - श्री नेत्र बहादुर थापा
एम.टी.एस.

कम्प्यूटर आधुनिक तकनीक की एक महान खोज है। ये एक सामान्य मशीन है जो अपनी मेमोरी में ढेर सारे डाटा को सुरक्षित रखने की क्षमता रखती है। ये इनपुट, जैसे - की-बोर्ड और आउटपुट, जैसे - प्रिंटर के उपयोग से काम करता है। ये उपयोग करने में बेहद आसान है इसलिये कम उम्र के बच्चे भी इसे काफी आसानी से इस्तेमाल कर सकते हैं। ये बहुत ही भरोसेमंद है जिसे हम अपने साथ रख सकते हैं और कहीं भी और कभी भी प्रयोग कर सकते हैं। इससे हम अपने पुराने डेटा में बदलाव के साथ नया डेटा भी बना सकते हैं।

विद्यार्थी द्वारा कंप्यूटर का उपयोग -

कंप्यूटर एक बड़ा शब्दकोश और बड़ा स्टोरेज डिवाइस है, जो किसी भी तरह के डेटा को सुरक्षित रखने के लिये है, जैसे - कोई भी जानकारी, पढ़ाई से संबंधित सामग्री, प्रोजेक्ट, फोटो, विडियो, गाना, खेल आदि। ये एक इलेक्ट्रॉनिक मशीन है जो गणना करने तथा बड़ी समस्याओं को सुलझाने में दक्ष है। ये हमारे कौशल को बढ़ाने में और आसानी से जानकारी प्राप्त करने में भी हमारी मदद करता है। ये एक डेटा आधारित मशीन है। ये हमें कई सारे टूल्स उपलब्ध कराता है, जैसे - टेक्स्ट टूल्स, पेंट टूल्स आदि जो बच्चों के लिए बहुत फायदेमंद है और विद्यार्थी इसे अपने स्कूली तथा प्रोजेक्ट कार्यों में काफी प्रभावपूर्ण रूप में उपयोग कर सकते हैं।

कंप्यूटर का महत्व -

कार्य स्थल, शिक्षा के क्षेत्र में तथा निजी उपयोग के लिए कंप्यूटर का बहुत ही महत्व है। पुराने समय में हम सारे काम अपने हाथ से करते थे। लेकिन, आज कंप्यूटर की सहायता से खातों के प्रबंधन, डेटाबेस बनाने, आवश्यक जानकारी संग्रहीत करने जैसे विभिन्न उद्देश्यों को पूरा करने के लिए कंप्यूटर का उपयोग किया जाता है। आजकल हर कोई इंटरनेट के जरिए कंप्यूटर पर काम करना आसान मानता है। वास्तव में आज के समय कंप्यूटर हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।

अतः हम इसका प्रयोग बड़े और छोटे गणितीय गणनाओं के लिये सटीक ढंग से कर सकते हैं। इसका उपयोग मौसम की भविष्यवाणी, किताब, न्यूज पेपर, डाइग्मोजिंग बिमारी की छपाई आदि के लिए किया जा सकता है। इसका उपयोग दुनिया के किसी भी कोने से ऑनलाइन रेलवे आरक्षण, होटल या रेस्टोरेंट की बुकिंग के लिए किया जाता है। बड़ी-बड़ी कंपनियों में भी इसका उपयोग व्यापक है, जिसमें खाता, इनवॉइस, पे-रोल, स्टॉक नियंत्रण आदि के लिए होता है।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में हिन्दी का महत्व



- श्री गणेश भुजेल
भाई - श्री बिनोद भुजेल
कल्याण अधिकारी

हिन्दी एक प्राचीन भाषा है, जिसका न केवल विश्व इतिहास पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा है बल्कि आज भी दुनिया पर जबरदस्त प्रभाव पड़ा है। प्राचीन हिन्दी भाषा बहुत पुरानी है और संस्कृत के विकास की सीधी रेखा है। यह दुनिया की सबसे पुरानी धार्मिक और साहित्यिक परम्पराओं में से एक है। ऐसी परम्पराएं जिन्होंने अन्य धर्मों और कला के कार्यों को भी प्रभावित किया है, चाहे हम इसे महसूस करें या नहीं। इस तरह दुनिया की संस्कृतियों के ऐतिहासिक विकास में हिन्दी अविश्वसनीय रूप से महत्वपूर्ण है और न केवल सम्मान के योग्य, बल्कि अध्ययन के लायक। विश्व इतिहास या भाषाओं में रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति हिन्दी के विषय पर थोड़ा गहन अध्ययन कर सकता है। भारत भी दुनिया में एक उभरती हुई शक्ति है। यह अभी भी बड़े पैमाने पर गरीबी से जूझ रहा है, लेकिन इस बात के हर संकेत है कि भारत एक महाशक्ति के रूप में उभर रहा है। यदि और कुछ नहीं तो इसकी विशाल जनसंख्या का अर्थ यह है कि यह एक ऐसा बाजार है जिसे कोई भी वैश्विक व्यवसाय अनदेखा करने की उम्मीद नहीं कर सकता है और भारत ने एक क्षेत्रीय महशक्ति के रूप में स्वयं को स्थापित करने की अपनी इच्छा को भी स्पष्ट रूप से संकेत दिया है। इसका मतलब यह है कि आप उम्मीद कर सकते हैं कि भारत एक बड़ा और राजनीतिक तथा कलात्मक दोनों क्षेत्रों में दुनिया पर व्यापक प्रभाव, जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, हिन्दी अधिक से अधिक महत्वपूर्ण होती जाती है। संस्कृति अंत में कुछ पश्चिमी लोगों को यह जानकर आश्चर्य हो सकता है कि भारत दुनिया के सबसे बड़े और सबसे सफल फिल्म उद्योगों में से एक है। भारतीय सिनेमा का एक अलग स्वाद है और इसने फिल्म की दुनिया में कई नवाचारों का योगदान दिया है। वास्तव में उनकी मूल महिमा में उनकी सराहना करने के लिए ही हिन्दी के बारे में कुछ जानने से आपके अनुभव के लिए हजारों फिल्में तुरंत खुल जाती है। ऐसी फिल्में जिनका भारत और उसके बाहर जबरदस्त सांस्कृतिक प्रभाव रहा है। अगली बार आप भारत से बाहर एक कहानी पढ़ें या पाकिस्तान और भारत के बीच अंतरराष्ट्रीय संबंधों के बारे में सुनें, हिन्दी के बारे में सोचें। हिन्दी हमारी सबसे पुरानी तथा जटिल भाषाओं में से एक है और एक ऐसी भाषा जो आज भी महत्वपूर्ण एवं विकसित हो रही है।

प्रलय के समय समुद्र अपनी मर्यादा को त्याग देता है और किनारों को छोड़ देता है। लेकिन सज्जन पुरुष प्रलय के समय भी अपनी मर्यादा नहीं छोड़ता।

- चाणक्य

कोविड-19 की यंत्रणा



- श्री सेंडरसन सुन
डाटा एण्ट्री ऑपरेटर, ग्रेड "बी"

बिन बुलाए मेहमान की तरह तुम आए हो,
और अत्याचारी पंक्तियाँ जैसे किसी ने कहा कि,
असावधान क्या हमें मार सकता है ?
हम देखते है मौत आ रहा है,
जानते नहीं कब हमसे टकराएगा ।

दुनिया स्थिर है,
और इतिहास स्वयं को घेरगा,
हैजा और यक्ष्मा के समय की तरह,
नहीं पता था कि क्या उम्मीद करें ।

एकांत में समय बिताया,
सोशल डिस्टेन्सिंग में समय बिताया,
एक गरीब की जिन्दगी पर जुल्म ढाया है,
और धनवानों की भी भर-भराहट सुनाई दी ।

स्कूल बंद, व्यवसाय प्रतिबंधित,
बाजारों में कीमतों में गिरावट,
और हम सब जानते हैं कि,
हम अपने मास्क के साथ एक दूसरे से दूरी बना रहे है।

परिवार एक साथ समय बिताते हैं,
लेकिन सभी माता-पिता डरते है कि क्या खिलाएँ ?
आवारा भी निराहर देख रहे थे,
क्योंकि उनके लिए खाना भी कम मात्रा में उपलब्ध थे।

अर्जुन के तीर



- श्री दीपक कुमार
एम.टी.एस.

धीर बनो, गंभीर बनो,
अर्जुन के तुम तीर बनो ।
द्रौपदी स्वयंवर या जीवन संग्राम,
समय के तुम वीर बनो ।

कर्म की जंग हो या धर्म की,
सामर्थ्य दिखाओ, पुरुषार्थ दिखाओ ।
जो लड़ा, वहीं खड़ा है,
जग में उसी का यशगान रहा है ।

शमा वही नहीं, जहाँ खून बहा,
जीवन भी एक सागर है ।
जिसने शिदत से लड़ा,
वहीं अजर-अमर रहा है ।

लक्ष्य हमारा जीवन का जैसे मत्स्यचक्षु,
चलो जैसे, गांडीव से तीर चला ।
धैर्य, ध्यान ही शस्त्र हमारे,
जैसे अर्जुन के ये तीर-कमान ।

धीर बनो, गंभीर बनो,
अर्जुन के तुम तीर बनो ।

सारे मानव समाज को सुंदर बनाने की साधना का ही नाम साहित्य है ।

- हजारि प्रसाद द्विवेदी

बाल मजदूरी



- सुश्री अमृता दास
बेटी - श्री सुजीत कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बाल मजदूरी बच्चों से लिया जाने वाला काम है जो किसी भी क्षेत्र में उनके मालिकों द्वारा करवाया जाता है। ये एक दबावपूर्ण व्यवहार है जो अभिवावक या मालिकों द्वारा किया जाता है। बचपन सभी बच्चों का जन्म सिद्ध अधिकार है, जो माता-पिता के प्यार और देख-रेख में सभी को मिलना चाहिए। ये गैरकानूनी कृत्य बच्चों को बड़ों की तरह जीने पर मजबूर करता है। इसके कारण बच्चों के जीवन में कई सारी जरूरी चीजों की कमी हो जाती है जैसे दृ उचित शारीरिक वृद्धि तथा विकास, दिमाग का अनुपयुक्त विकास, सामाजिक और बौद्धिक रूप से अस्वास्थ्यकर इत्यादि।

इसकी वजह से बच्चे बचपन के प्यारे लम्हों से दूर हो जाते हैं, जो हर एक के जीवन का सबसे यादगार और खुशनुमा पल होता है। ये किसी बच्चे के नियमित स्कूल जाने की क्षमता को बाधित करता है जो इन्हें समाजिक रूप से देश का खतरनाक और नुकसान दायक नागरिक बनाता है। बाल मजदूरी को पूरी तरह से रोकने के लिये ढेरों नियम-कानून बनाने के बावजूद भी ये गैर-कानूनी कृत्य दिनों-दिन बढ़ता ही जा रहा है।

बाल मजदूरी इंसानियत के लिये अपराध है, जो समाज के लिये श्राप बनता जा रहा है तथा जो देश के वृद्धि और विकास में बाधक के रूप में बड़ा मुद्दा है। बचपन जीवन का सबसे यादगार क्षण होता है जिसे हर एक को जन्म से जीने का अधिकार है।

बच्चों को अपने दोस्तों के साथ खेलने का, स्कूल जाने का, माता-पिता के प्यार और परवरिश के एहसास करने का तथा प्रकृति की सुंदरता का आनंद लेने का पूरा अधिकार है। जबकि केवल लोगों (माता-पिता या मालिक) की गलत समझ की वजह से बच्चों को बड़ों की तरह जीवन बिताने पर मजबूर होना पड़ रहा है। जीवन के हर जरूरी संसाधनों की प्राप्ति के लिये उन्हें अपना बचपन कुर्बान करना पड़ रहा है।

माता-पिता अपने बच्चों को परिवार के प्रति बचपन से ही जिम्मेदार बनाना चाहते हैं। वो ये नहीं समझते कि उनके बच्चों को प्यार और परवरिश की जरूरत होती है। उन्हें नियमित स्कूल जाने तथा अच्छी तरह से बड़ा होने के लिए दोस्तों के साथ खेलने की जरूरत है। बच्चों से काम कराने वाले माँ-बाप सोचते हैं कि बच्चे उनके जागीर होते हैं और वो उन्हें अपने हिसाब से इस्तेमाल करते हैं। वास्तव में हर माता-पिता को ये समझना चाहिए कि देश के प्रति भी उनकी कुछ जिम्मेदारी है। देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिये उन्हें अपने बच्चों को हर तरह से स्वस्थ बनाना चाहिए।

माता-पिता को परिवार की जिम्मेदारी खुद से लेनी चाहिए तथा अपने बच्चों को उनका बचपन प्यार और अच्छी परवरिश के साथ जीने देना चाहिए। पूरी दुनिया में बाल मजदूरी के लिए मुख्य कारण गरीबी, माता-पिता, समाज, कम आय, बेरोजगारी, खराब जीवन शैली तथा समझ, सामाजिक न्याय, स्कूलों की कमी, पिछड़ापन और अप्रभावशाली कानून है जो देश के विकास को प्रत्यक्षतः प्रभावित कर रहा है।

ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है



- श्रीमती मुमताज बेगम
पत्नी - मुहम्मद जियाउल हक
वरिष्ठ अनुवादक

जीवन में ईमानदार होना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बहुत सी समस्याओं को हल करती है और शान्ति व सफलता की ओर ले जाती है। ईमानदारी वह सम्पत्ति है, जो ईमानदार व्यक्तियों को जीवन में बहुत अधिक विश्वास और सम्मान देती है। श्री बेंजामिन फ्रेंकलिन द्वारा कही गयी एक प्रसिद्ध कहावत है - “ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है।”

सादगी के साथ एक ईमानदार जीवन सभी अनावश्यकता से अलग जीवन है, जिसका यदि सभी के द्वारा पालन किया जाए तो परिवार और समाज में एकरूपता लाती है। ईमानदारी अच्छी सम्पत्ति है, जो शान्तिपूर्ण जीवन और सम्मान के साथ सफलता प्राप्त करने में मदद करती है। ईमानदार होना जीवन में सबसे महत्वपूर्ण चीजों पर ध्यान केन्द्रित करने में मदद करता है।

शान्तिपूर्ण जीवन के लिए ईमानदारी -

हालांकि, ईमानदारी की आदत को विकसित किए बिना हम सरलता और जीवन की अन्य अच्छाइयों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। हम कह सकते हैं कि ईमानदारी सरलता के बिना हो सकती है पर सरलता ईमानदारी के बिना कभी भी नहीं हो सकती है। बिना ईमानदारी के हम दो संसारों में रहते हैं, अर्थात् एक सच्चा संसार और दूसरा वह संसार जो हमने विकल्प के रूप में बनाया है। फिर व्यक्ति “ईमानदारी सर्वश्रेष्ठ नीति है”, का जीवन के हरेक पहलू (व्यक्तिगत, व्यवसाय, नौकरी और अन्य रिश्तों) में पालन करते हैं तथा आमतौर पर एक समान जीवन जीते हैं। एक तरफ जहाँ ईमानदारी हमें सरलता की ओर ले जाती है, वहीं दूसरी ओर बेईमानी हमें दिखावे की ओर ले जाती है।

ईमानदारी का इतिहास -

इतिहास गवाह है कि अब्राहम लिंकन और लाल बहादुर शास्त्री जैसे ईमानदार राजनेताओं, न्यूटन, आइंस्टीन और अन्य जैसे वैज्ञानिकों ने सभी उम्र से अधिक नाम कमाया है। हम महात्मा गांधी, लियो टहल्लस्टहय, मार्टिन लूथर किंग जैसे महान और ईमानदार व्यक्तियों को कभी नहीं भूल सकते क्योंकि उन्होंने अपनी जिन्दगी ईमानदारी और महान कार्य करने के लिए समर्पित की थी।

ईमानदारी का अर्थ -

ईमानदारी एक शक्ति है, जिसमें भ्रष्टाचार को दूर करने और समाज से कई सामाजिक मुद्दों को हल करने की क्षमता है। ईमानदारी का अभ्यास करना जटिल हो सकता है और शुरुआत में इससे लोगों को मुश्किल हो सकती है लेकिन, बाद में इससे बेहतर और आराम महसूस होता है। यह एक व्यक्ति को सहज महसूस करता है और किसी भी प्रकार के बोझ से मुक्त रखता है।

ईमानदारी की जीवन-शैली के लाभ -

1. जीवन में ईमानदारी का अर्थ अंतरंगता (पारस्परिकता) का रास्ता है, अर्थात् यह हमारे मित्रों को हमारे बहुत करीब सच्चे मित्र की तरह वास्तविक सच के साथ लाती है न कि उनके करीब जहाँ हमें दिखावा करना पड़ता है।
2. यह जीवन में अच्छा, वफादार और उच्च गुणों वाले मित्रों को बनाने में मदद करती है क्योंकि ईमानदारी सदैव ईमानदारी को आकर्षित करती है।
3. यह भरोसेमंद होने में हमारी मदद करती है और जीवन में बहुत अधिक सम्मान को प्राप्त करती है क्योंकि ईमानदार लोगों पर दूसरे हमेशा विश्वास करते हैं।
4. यह मजबूती और आत्मविश्वास लाती है और दूसरों के द्वारा स्वयं को कम करके न आंकने में भी मदद करती है।
5. ऐसा देखा जाता है कि ईमानदार लोग आसानी से कल्याण की भावना विकसित कर लेते हैं और शायद ही कभी जुकाम, थकान, निराशा, अवसाद, चिंता और अन्य मानसिक समस्याओं को विकसित करते हैं।
6. ईमानदार लोग एक बेईमान की तुलना में राहत के साथ आरामदायक जीवन जीते हैं।
7. यह शान्तिपूर्ण जीवन का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण है और हमें परेशानियों से बाहर निकालता है।
8. शुरुआत की स्थिति में ईमानदारी को विकसित करने में बहुत से प्रयास लगते हैं हालांकि, बाद में यह बहुत आसान हो जाती है।

अतः हम कह सकते हैं कि जीवन में अच्छा चरित्र, विश्वास और नैतिकता ईमानदारी को विकसित करने का कार्य करती है क्योंकि एक अच्छे चरित्र वाले व्यक्ति के पास किसी से भी छिपाने के लिए कुछ भी नहीं होता है। इसलिए हमें अपने जीवन में ईमानदार बनने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि ईमानदारी हर सफलता की कुंजी होती है।

आदर्श विद्यार्थी



- सुश्री नीतू थापा
पुत्री - श्री नेत्र बहादुर थापा
एम.टी.एस.

एक आदर्श छात्र वह है जो समर्पित रूप से अध्ययन करता है, स्कूल और घर में ईमानदारी से व्यवहार करता है। हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा एक आदर्श छात्र बने जो दूसरों के लिए प्रेरणा स्रोत बन सके। आदर्श छात्रों का हर जगह यानी स्कूलों, कोचिंग सेंटरों और खेल अकादमियों में स्वागत किया जाता है। आदर्श छात्र सटीकता के साथ उन्हें सौंपे गए सभी कार्यों को पूरा करते हैं। वे शीर्ष पर रहना पसंद करते हैं तथा उस स्थान को हासिल करने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं।

एक आदर्श छात्र को निखारने में माता-पिता और शिक्षक की भूमिका -

हर माता-पिता चाहते हैं कि उनके बच्चे अपनी कक्षा में हर काम में प्रथम रहें एवं दूसरों के लिए एक आदर्श उदाहरण बने। कई छात्र अपने माता-पिता की अपेक्षाओं को पूरा करना चाहते हैं लेकिन एक आदर्श छात्र बनने के लिए उनमें दृढ़ संकल्प और कई अन्य कारकों की कमी होती है। कुछ लोग प्रयास करते हैं और असफल होते हैं पर कुछ लोग प्रयास करने में ही असफल हो जाते हैं लेकिन क्या अकेले छात्रों को इस विफलता के लिए दोषी ठहराया जाना चाहिए? नहीं! माता-पिता को यह समझना चाहिए कि वे अपने बच्चों के समग्र व्यक्तित्व को बदलने और जीवन के प्रति सकारात्मक रवैया बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं। यह उनका कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों को स्कूल में अच्छा करने के महत्व को समझने में उनकी सहायता करें।

कई माता-पिता अपने बच्चों को बड़े सपने दिखाते हैं और उन्हें बताते हैं कि कैसे स्कूल के दिनों में अच्छे ग्रेड लाए जाते हैं और उसके लिए कड़ी मेहनत की जाती है जो उन्हें उनकी पेशेवर और व्यक्तिगत जिंदगी में बाद में मदद करती है। हालांकि उनमें से अधिकतर अपने बच्चों को यह नहीं सिखाते हैं कि निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कैसे कड़ी मेहनत करें और प्रेरित रहें। माता-पिता को बच्चों के साथ मिलकर काम करना चाहिए ताकि वे स्कूल में अच्छा कर सकें। शिक्षक अपने छात्रों के व्यक्तित्व को समान रूप से सुधारने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्हें सकारात्मक रूप से प्रभावित करने और हर कदम पर उन्हें प्रोत्साहित करने के तरीके ढूंढने की आवश्यकता है।

एक आदर्श छात्र की विशेषताएं -

मेहनती - एक आदर्श छात्र लक्ष्य निर्धारित करता है और उन्हें प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करता है वह अध्ययन, खेल और अन्य गतिविधियों में सर्वश्रेष्ठ करना चाहता है और ऐसा करने के लिए अपने सर्वोत्तम प्रयास में शामिल होने से संकोच नहीं करता ।

लक्ष्य निर्धारण करना - एक आदर्श छात्र कभी भी मुश्किल होने पर हार नहीं मानता । वह निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निर्धारित रहता है और सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार कार्य करता है ।

समस्या निवारक - कई छात्र विद्यालय या कोचिंग सेंटर तक देर से पहुंचने, अपने होमवर्क को पूरा नहीं करने, परीक्षा में अच्छी तरह से प्रदर्शन नहीं करने आदि के लिए बहाने देते हैं । हालांकि एक आदर्श छात्र वह है जो बहाने मारने की बजाए ऐसी समस्याओं का हल ढूंढता है ।

भरोसेमंद - आदर्श छात्र भरोसेमंद होता है । शिक्षक अक्सर उन्हें अलग-अलग कर्तव्यों का आवंटन करते हैं जो वे बिना असफल हुए पूरा करते हैं ।

सकारात्मक - एक आदर्श छात्र हमेशा सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है । यदि पाठ्यक्रम बड़ा है या शिक्षक अध्ययन करने के लिए समय दिए बिना परीक्षा लेता है या फिर कुछ प्रतियोगी गतिविधियां अचानक रखी जाती हैं तो भी आदर्श छात्र घबराता नहीं है । आदर्श विद्यार्थी हर स्थिति में सकारात्मक बना रहता है और मुस्कुराहट के साथ चुनौती स्वीकार करता है ।

जानने के लिए उत्सुक - एक आदर्श छात्र नई चीजें सीखने के लिए उत्सुक रहता है । वह कक्षा में सवाल पूछने में संकोच नहीं करता । एक आदर्श छात्र भी पुस्तकों को पढ़ने और इंटरनेट पर सर्फ करने के अपने तरीके से अलग-अलग चीजों के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाने के लिए तत्पर रहता है ।

पहल करता है - एक आदर्श छात्र भी पहल करने के लिए तैयार रहता है । यह ज्ञान और क्षमता को जानने, समझने और बढ़ाने का एक बढ़िया तरीका है ।

अतः कहा जा सकता है कि इस धरती पर किसी ने भी परिपूर्ण या आदर्श रूप में जन्म नहीं लिया है । किसी भी छात्र में आदतें पैदा करने के लिए समय लगता है, जिससे वहीं छात्र आदर्श बनता है । माता-पिता और शिक्षक दोनों को बच्चे में छिपी संभावितता पहचानने के लिए प्रयास करने चाहिए ।

अहिंसा ही धर्म है । अधर्म से प्राप्त वस्तु को अस्वीकार करना ही व्रत है । अनिच्छा से रहना ही तय है । किसी से कपट न करना ही भक्ति है । सुख-दुःख अदिद्वंद्वों में समभाव से रहना ही समायाचार है । यही सत्य है ।

- वसवेश्वर

गरीबी

- श्रीमती अपर्णा रानी दास
पत्नी - श्री सुजीत कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

आज के समय में गरीबी को दुनियां के सबसे बड़ी समस्याओं में से एक माना जाता है। गरीबी एक ऐसी मानवीय स्थिति है, जो हमारे जीवन में दुख-दर्द तथा निराशा जैसी विभिन्न समस्याओं को जन्म देती है। गरीबी में जीवन जीने वाले व्यक्तियों को ना तो अच्छी शिक्षा की प्राप्ति होती है और ना ही उन्हें अच्छी सेहत मिलती है।

गरीबी एक ऐसी मानवीय परिस्थिति है जो हमारे जीवन में निराशा, दुख और दर्द लाती है। गरीबी पैसे की कमी है और जीवन को उचित तरीके से जीने के लिए सभी चीजों के कमी को प्रदर्शित करता है। गरीबी एक बच्चे को बचपन में स्कूल में दाखिला लेने में अक्षम बनाती है और वो एक दुखी परिवार में अपना बचपन बिताने या जीने को मजबूर होते हैं। निर्धनता और पैसों की कमी की वजह से लोग दो वक्त की रोटी, बच्चों के लिए किताबें नहीं जुटा पाने और बच्चों का सही तरीके से पालन-पोषण नहीं कर पाने के जैसी समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं।

भारत में गरीबी देखना बहुत आम सा हो गया है क्योंकि ज्यादातर लोग अपने जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को भी नहीं पूरा कर सकते हैं। यहाँ पर जनसंख्या का एक विशाल भाग निरक्षर, भूखे और बिना कपड़ों और घर के जीने को मजबूर हैं। भारतीय अर्थव्यवस्था के कमजोर होने का यही मुख्य कारण है। निर्धनता के कारण लगभग भारत में आधी आबादी दर्द भरा जीवन जी रही है।

गरीबी एक स्थिति उत्पन्न करती है जिसमें लोग पर्याप्त आय प्राप्त करने में असफल हो जाते हैं इसलिये वो जरूरी चीजों को नहीं खरीद पाते हैं। एक निर्धन व्यक्ति अपने जीवन में मूल वस्तुओं के अधिकार के बिना जीता है जैसे दू दो वक्त का भोजन, स्वच्छ जल, घर, कपड़े, उचित शिक्षा इत्यादि। ये लोग जीने के न्यूनतम स्तर को भी बनाए रखने में विफल हो जाते हैं, जैसे दृ अस्तित्व के लिए जरूरी उपभोग और पोषण आदि।

भारत में निर्धनता के कई कारण हैं। हालांकि राष्ट्रीय आय का गलत वितरण भी एक कारण है। कम आय वर्ग समूह के लोग उच्च आय वर्ग समूह के लोगों से बहुत ज्यादा गरीब होते हैं। गरीब परिवार के बच्चों को उचित शिक्षा, पोषण और खुशनुमा बचपन का माहौल कभी नसीब नहीं हो पाता है। निर्धनता का मुख्य कारण, अशिक्षा, भ्रष्टाचार, बढ़ती जनसंख्या, कमजोर कृषि, अमीरी और गरीबी के बीच बढ़ती खाई आदि है।

अतः गरीबी मानव जीवन की वह समस्या है, जिसके कारण इससे ग्रसित व्यक्ति को अपने जीवन में मूलभूत सुविधाएं भी नहीं मिल पाती है। यही कारण है कि वर्तमान समय में गरीबी से निवारण के कई उपाय ढूँढे जा रहे हैं, ताकि विश्व भर के लोगों के जीवन स्तर को सुधारा जा सके।

पर्यावरण प्रदूषण



- श्री अलोक कुमार
डाटा एंट्री ऑपरेटर

पर्यावरण प्रदूषण उस स्थिति को कहते हैं, जब मानव द्वारा पर्यावरण में अवांछित तत्वों की उपस्थिति अत्यधिक मात्रा में बढ़ जाती है। प्रदूषण कई प्रकार का होता है, जैसे दृ वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण इत्यादि। प्रदूषण की समस्या आज मानव समाज के सामने खड़ी सबसे गंभीर समस्याओं में से एक है। पिछले कुछ दशकों में प्रदूषण तेजी से बढ़ता जा रहा है, जो कि न केवल भारत अपितु पूरे विश्व के लिए एक गंभीर समस्या है। इस भयंकर सामाजिक समस्या का मुख्य कारण औद्योगीकरण, वनों की कटाई, शहरीकरण और प्राकृतिक संसाधन को गन्दा करने वाले उत्पादों का सामान्य जीवन में इस्तेमाल का बढ़ना है।

पुरातन काल में प्रकृति से संसाधनों को प्राप्त करना मनुष्य के लिए सामान्य बात थी। उस समय बहुत कम लोग ही यह सोच सके थे कि संसाधनों का अंधाधुंध उपयोग मानव जाति के लिए इतनी इतनी बड़ी समस्या खड़ी कर सकता है। हम जितना भी प्रकृति से लेते थे, प्रकृति उतने संसाधन दोबारा पैदा कर देती थी। ऐसा लगता था कि प्रकृति का भंडार असीमित है, जो कभी खत्म ही नहीं होगा। लेकिन, जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ने लगी, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन बढ़ता ही चला गया। अपनी जरूरतों के लिए प्रकृति को नुकसान पहुँचाया गया। मानव द्वारा मशीनों के निर्माण ने उस काम में और तेजी ला दी।

दुनिया भर के उद्योग भले ही वे संपन्नता और समृद्धि लाए हैं लेकिन, पारिस्थितिक संतुलन को लगातार बिगाड़ रहे हैं और जीवमंडल का नाश कर रहे हैं। वैज्ञानिक प्रयोगों का प्रक्षेपण, धुएं का गुबार, औद्योगिक अपशिष्ट और विषैली गैसों पानी और हवा दोनों को दूषित करते हैं। औद्योगिक कचरे का अनुचित निपटान जल और मृदा प्रदूषण दोनों का स्रोत बन गया है। विभिन्न उद्योगों से निकलने वाले रासायनिक कचरे से नदियों, झीलों, समुद्रों और धुएं के छोड़े जाने के माध्यम से मिट्टी और हवा में प्रदूषण फैल रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण के प्रकार -

वायु प्रदूषण - वायु हमारे जीवन के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटक है। हम बिना खाए-पिए एक दो दिन रह भी सकते हैं, लेकिन बिना श्वास के एक क्षण भी बिताना मुश्किल होता है और सोचिए अगर जिस

वायु से हम सांस लेते हैं, वही प्रदूषित हो गया तो हमारे लिए कितना विनाशकारी हो सकता है ।

जल प्रदूषण - जल प्रदूषण तब होता है जब हानिकारक पदार्थ, जैसे दृ रसायनों या फैक्ट्रियों का अपशिष्ट, नदी, झील, महासागर, जलभृत या पानी के अन्य स्रोत में जाकर मीलते हैं । जब हम इसे पीते हैं, तो शरीर को दूषित करते हैं, साथ ही पानी की गुणवत्ता को कम करते हैं और इसे मनुष्यों और पर्यावरण के लिए विषाक्त करते हैं ।

भूमि प्रदूषण (मृदा प्रदूषण) - मृदा प्रदूषण किसी भी चीज को संदर्भित करता है जो मिट्टी के प्रदूषण का कारण बनता है और मिट्टी की गुणवत्ता को खराब करता है । मृदा प्रदूषण अधिक मात्रा में कीटनाशकों, उर्वरकों, अमोनिया, पेट्रोलियम हाइड्रोकार्बन, नाइट्रेट, नेफथलीन आदि रसायनों की उपस्थिति के कारण हो सकता है ।

ध्वनि प्रदूषण - इसका मुख्य कारण बढ़ती आबादी तथा निरन्तर शोरगुल है । कल-कारखानों से निकली आवाज, वाहनों का शोर, उपकरणों की आवाज और चारों दिशाओं से आने वाली विभिन्न प्रकार की आवाजें । महानगरों में तो ध्वनि प्रदूषण अपनी चरम सीमा को पार कर रहा है ।

यह बताना अनावश्यक है कि पर्यावरण प्रदूषण ने मानव की मूलभूत आवश्यकताओं, अर्थात् दृ जल, भोजन, वायु और मिट्टी के अंदर अपने विषैले पदार्थों को फैला दिया है । यह हमारे रहने, पीने और खाने को प्रभावित करता है । यह इंसानों के साथ जानवरों के स्वास्थ्य को भी नुकसान पहुंचाता है । विभिन्न चीजें हवा को प्रदूषित करती हैं, जैसे दृ मोटर वाहन प्रज्वलन और उद्योगों से गैसीय उत्सर्जन, हवा के अंदर जीवाश्म ईंधन को जलाना आदि । इसी तरह कृषि की अकार्बनिक प्रक्रियाएं मिट्टी की उर्वरता को नष्ट कर देती हैं । जैसा कि हम सभी जानते हैं कि पीने के लिए उपयोग की जाने वाली पानी, भोजन उगाने के लिए उपयोग की जाने वाली मिट्टी और साँस लेने के लिए हवा का उपयोग किया जाता है । ये तीनों के दूषित तत्व मानव के शरीर के अंदर पहुंच जाते हैं और परिणामस्वरूप रोग पैदा होते हैं । अतः पर्यावरण पर निर्भर हमारा यह जीवन बनाए रखने के लिए हमें पर्यावरण की वास्तविकता को बनाए रखना होगा ।

“पर्यावरण की रक्षा करना कर्तव्य है हमारा,
खुशहाल और सुरक्षित जीवन का बस यही है सहारा ।”

प्रलय के समय समुद्र अपनी मर्यादा को त्याग देता है और किनारों को छोड़ देता है। लेकिन सज्जन पुरुष प्रलय के समय भी अपनी मर्यादा नहीं छोड़ता।

- चाणक्य

हैंड वाश

- श्री सुजीत कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हैंड वाश एक ऐसी आदत है जिसे हर किसी को अपनाना चाहिए। यह एक ऐसी आदत है जो आपको बीमारियों से भी बचाता है। इससे केवल वही लाभांविता होता है जो इसका हमेशा प्रयोग करता है। स्वस्थ रहने की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है हैंड वाश और सही मायनों में ये कई जिंदगियों को बचाता है। हमें बच्चों में शुरू से यह आदत विकसित करनी चाहिए, जो आगे चलकर उनके बहुत काम आती है। हाथों को धुलना केवल आपके लिए ही नहीं अपितु हर आयु के लोगों के लिए आवश्यक होता है और हम सबको इसकी आदत डालनी चाहिए।

हैंड वाश से होने वाले लाभ -

1. यह आपके हाथों में से गंदे कीटाणुओं को मारता है।
2. एक सर्वे में यह पाया गया है कि हर साल कई लाख लोग हाथ धुलने के अच्छी आदत की वजह से किसी संक्रमण का शिकार नहीं होते।
3. जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है उन्हें भी यह हर प्रकार के संक्रमण से बचाता है।
4. यह कई हानिकारक बीमारियां जैसे कि निमोनिया, दस्त, इन्फ्लूएंजा, पेट के कीड़े इत्यादि रोगों से बचाता है।
5. भयंकर बीमारियों पर होने वाले खर्च से भी आपको बचाता है।

हैंड वाश के नियम -

हैंड वाश का अर्थ केवल हाथ को ऐसे ही धुल लेना नहीं होता, अपितु हाथों को कम से कम 20 से 30 सेकंड तक अच्छी तरह साबुन से धुलना होता है। साबुन को किटाणुओं को मरने की प्रक्रिया में निर्दिष्ट समय लग जाता है, इसलिए कहा जाता है कि कम से कम 20 सेकंड तक अवश्य हाथ धोएं। हाथों को अच्छी तरह से ऊपर व नीचे दोनों तरफ रगड़-रगड़ के धोएं। हाथों को धुलने के बाद साफ तौलिये से पोछें और हाथों को अच्छी तरह सुखा लें।

अतः हैंड वाश किसी भी प्रकार से आपको नुकसान नहीं पहुंचाता और हम सबको इसे जरूर अपनाना चाहिए। हर व्यक्ति को अपने स्वास्थ्य का ध्यान अवश्य रखना चाहिए। आप स्वास्थ्य रहेंगे तो आपका परिवार भी सुरक्षित रहेगा और आपका परिवार सुरक्षित तो आपका क्षेत्र और इसी प्रकार आप पूरे देश को सुरक्षित रख सकते हैं। कहते हैं की बूंद-बूंद से ही सागर बनता है और इस प्रकार छोटी-छोटी कोशिशों से हम खुद को कई बीमारियों से बचा सकते हैं।

एकता में बल है



- मुहम्मद अरिफुल हक
भाई - मुहम्मद जियाउल हक
वरिष्ठ अनुवादक

एकता में बल है - एक पुरानी कहावत है। आज के समय में भी यह कहावत उसी सच की तरह है जैसे यह पहले के जमाने में होती थी। इसका मतलब है कि अगर हम एकजुट रहें तो हम मजबूत हो जाते हैं। एकता में बहुत बल है क्योंकि यदि हम एक साथ खड़े रहे तो हम हमेशा मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक रूप से मजबूत होंगे। एकता में बल है, यह कहावत रिश्तों पर भी लागू होती है।

इस दुनिया में लोग शक्ति और सफलता में इतने अंधे हो चुके हैं कि वे अपने रिश्तेदारों, सहयोगियों और दोस्तों से आगे रहना चाहते हैं। वे एक दूसरे के साथ निजी और व्यावसायिक प्रतिद्वंद्विता में रहते हैं। वे यह नहीं समझ सकते कि यदि वे अपने ज्ञान को दूसरों के साथ साझा करते हंभ और एक दूसरे की मदद करते हैं तो वे आगे बढ़ सकते हैं तथा अपने कौशल को बढ़ा सकते हैं। जब हम अपने स्वयं के दिल के सदस्यों के खिलाफ जाते हैं और कार्यालय में उनके साथ प्रतिस्पर्धा करना शुरू करते हैं तो अन्य टीमों या विभागों के लोग इस स्थिति से लाभ उठा सकते हैं।

अविश्वास एक और वजह है कि क्यों लोग अलग-थलग रहते हैं। यह तथ्य विशेष रूप से तब सच होता है जब एक पति और पत्नी के रिश्ते की बात आती है जहाँ जोड़े अक्सर एक दूसरे पर संदेह करते हैं। वे छोटी-छोटी चीजों के लिए एक दूसरे से सवाल करते हैं और धोखाधड़ी या झूठ बोलने का संदेह करते हैं। कई बार बाहरी लोग इस स्थिति का लाभ उठाते हैं। वे संदेह को बढ़ावा देते हैं और अपने स्वयं के स्वार्थी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दोनों के बीच संघर्ष उत्पन्न करते हैं। इसका न केवल पति-पत्नी, बल्कि उनके बच्चों पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यदि पति और पत्नी एकजुट रहें और एक दूसरे की रक्षा करें तो कोई भी उनके बीच दरार पैदा कर नहीं कर सकता है।

कई परिवारों में भाई और बहन एक दूसरे से लड़ते हैं और अपने बीच शत्रुता को जन्म देते हैं। आगे जाकर यह अक्सर संपत्ति या परिवार के व्यवसाय के विभाजन को जन्म देता है। ऐसे मामले में बाहरी लोग स्थिति का लाभ उठाते हैं और संपत्ति के एक बड़े हिस्से पर कब्जा कर लेते हैं। यदि भाई-बहन एकजुट हो जाते हैं तो वे अपने संयुक्त प्रयासों और कौशल के साथ व्यापार को बेहतर बनाने में भी सक्षम होंगे।

संस्थाओं और राष्ट्रों पर भी एकता में बल है लागू होता है -

यह कहावत न केवल पेशेवर और व्यक्तिगत संबंधों पर बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र पर भी लागू होती है। ऐसे इलाके और समाज जहां लोग एकजुट रहते हैं, उन्हें सब प्यार करते हैं। इन क्षेत्रों के लोग मुस्कुराहट के साथ अपने पड़ोसियों से मिलते हैं तथा संकट में एक दूसरे की मदद करते हैं। जब पड़ोसी घर पर न हो तो वे अपने पड़ोसी के घर की रक्षा करते हैं और हमेशा एक दूसरे की मदद के लिए तैयार रहते हैं। वे सभी कार्यों का जश्न एक साथ मनाते हैं और कुछ अन्य सामाजिक समारोहों का आयोजन करते रहते हैं। आज के समय में जब अधिकांश लोग अकेलेपन और अवसाद से पीड़ित हैं तो ऐसा पड़ोस एक वरदान साबित हो सकता है। यह बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए भी अच्छा है जो अक्सर एकल परिवार प्रणाली में अकेला महसूस करते हैं। ऐसी संस्थाओं में चोरी और डकैतियों की संभावना भी कम होती है। यही बात देश के सन्दर्भ में भी लागू होती है। अगर हम आपस में अपनी छोटी-छोटी बातों की वजह से लड़ना बंद कर देते हैं तो हम एक राष्ट्र के रूप में कभी भी मजबूत नहीं हो सकते हैं।

इसी तरह दुनिया भर के विभिन्न राष्ट्र एक दूसरे के साथ संघर्ष कर रहे हैं, ताकि यह साबित कर सकें कि वे एक दूसरे से बेहतर हैं। आज ज्यादातर राष्ट्र के पास परमाणु हथियार हैं इसलिए कई आतंकवादी संगठन गठित हो गए हैं और इतने सारे भ्रष्ट लोग एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश कर रहे हैं। लोग लगातार भय में जी रहे हैं। अगर हम इन सभी बुरी प्रथाओं को रोकते हैं और एकजुट हो जाते हैं तो दुनिया जीने के लिए बेहतर जगह बन जाएगी।

भारत का स्वतंत्रता संग्राम एक उपयुक्त उदाहरण है -

भारत की स्वतंत्रता संग्राम “एकता में बल है” के सर्वोत्तम उदाहरणों में से एक है। ब्रिटिश सरकार ने भारत में अपनी पकड़ को मजबूत करने के लिए विभाजन और नीति की युक्ति का अपयोग किया लेकिन, देश के नागरिक जल्द ही इस हेर-फेर की रणनीति को समझ गए। वे सभी एक साथ खड़े हुए और अंग्रेजों को देश से बाहर कर दिया।

अतः कहा जा सकता है कि इस तथ्य के बारे में कोई संदेह नहीं है कि हमारी ताकत एकता में निहित है। अतीत में कई कहानियों और साथ ही वास्तविक जीवन की घटनाओं ने भी यह साबित कर दिया है कि हमें एकता के मार्ग का पालन करना चाहिए।

हिन्दी दुनिया की महान भाषाओं में एक है। भारत को समझने के लिए हिन्दी ज्ञान अनिवार्य है। हिन्दी का महत्व आज इसलिए और बढ़ गया है क्योंकि भारत आज शिक्षा, उद्योग और तकनीक के हिसाब से दुनिया का अग्रणी देश है।

- डॉ. मैग्रेशर

दहेज प्रथा



- श्री दिनेश थापा
पुत्र - श्री नेत्र बहादुर थापा
एम.टी.एस.

दहेज मूल रूप से शादी के दौरान दुल्हन के परिवार द्वारा दूल्हे के परिवार को दिए नकदी, आभूषण, फर्नीचर, संपत्ति और अन्य कीमती वस्तुओं इत्यादि प्रथा को दहेज कहा जाता है। यह सदियों से भारत में प्रचलित है। दहेज प्रथा समाज में प्रचलित बुराइयों में से एक है। यह मानव सभ्यता पुरानी है और यह दुनिया भर में कई हिस्सों में फैली हुई है। यह बेटियों को आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होने में मदद करने के रूप में शुरू हुई थी क्योंकि वे विवाह के बाद नए स्थान पर नए तरीके से अपना जीवन शुरू करती है पर समय बीतने के साथ यह महिलाओं की मदद करने के बजाए एक घृणित प्रथा में बदल गई।

दहेज समाज के लिए एक अभिशाप है -

दहेज दुल्हन के परिवार द्वारा दूल्हे और उसके परिवार को नकद, संपत्ति तथा अन्य संपत्तियों के रूप में उपहार देने की प्रथा है, जिसे वास्तव में महिलाओं, विशेष रूप से दुल्हनों के लिए शाप कहा जा सकता है। दहेज ने महिलाओं के खिलाफ कई अपराधों को जन्म दिया है। इस प्रथा से दुल्हन और उसके परिवार के सदस्यों के लिए उत्पन्न विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न होती है, जैसे -

परिवार पर वित्तीय बोझ -

हर लड़की के माता-पिता उसके जन्म के बाद से उसकी शादी के लिए बचत करना शुरू कर देते हैं। वे कई साल शादी के लिए बचत करते हैं क्योंकि शादी के मामले में सजावट से लेकर खानपान तक की पूरी जिम्मेदारी उनके ही कंधों पर होती है। इसके अलावा उन्हें दूल्हे, उसके परिवार और रिश्तेदारों को भारी मात्रा में उपहार देने की आवश्यकता होती है। कुछ लोग अपने रिश्तेदारों और मित्रों से पैसे उधार लेते हैं, जबकि अन्य इन मांगों को पूरा करने के लिए बैंक से ऋण लेते हैं।

जीवन स्तर को कम करना -

दुल्हन के माता-पिता अपनी बेटी की शादी पर इतना खर्च करते हैं कि वे अक्सर अपने जीवन स्तर को कम करते हैं। कई लोग बैंक ऋण के चक्कर में फंसकर अपना पूरा जीवन इसे चुकाने में खर्च कर देते हैं।

भ्रष्टाचार को सहारा देना -

जिस व्यक्ति के घर में बेटी ने जन्म लिया है उसके पास दहेज देने और एक सभ्य विवाह समारोह का आयोजन करने से बचने का कोई विकल्प नहीं है। उन्हें अपनी लड़की की शादी के लिए पैसा जमा करना होता है और इसके लिए लोग कई भ्रष्ट तरीकों, जैसे कि रिश्वत लेने, टैक्स चोरी करने या अनुचित साधनों के जरिए कुछ व्यावसायिक गतिविधियों का संचालन करना शुरू कर देते हैं।

लड़की के लिए भावनात्मक तनाव -

सास-ससुरा अक्सर उनकी बहू द्वारा लाए गए उपहारों की तुलना उनके आसपास की अन्य दुल्हनों द्वारा लाए गए उपहारों से करते हैं और उन्हें नीचा महसूस कराते हुए व्यंग्यात्मक टिप्पणी करते हैं। लड़कियां अक्सर इस वजह से भावनात्मक रूप से तनाव महसूस करती हैं और मानसिक अवसाद से पीड़ित होती हैं।

शारीरिक शोषण -

जहाँ कुछ ससुराल वालों ने अपनी बहू के साथ बदसलूकी करने की आदत बना रखी है तथा कभी भी उसे अपमानित करने का मौका नहीं छोड़ते, वहीं कुछ ससुराल वाले अपनी बहू का शारीरिक शोषण करने में पीछे नहीं रहते। कई मामले दहेज की भारी मांग को पूरा करने में अपनी अक्षमता के कारण महिलाओं को मारने और जलाने के समय-समय पर उजागर होते रहते हैं।

कन्या भ्रूण हत्या -

लड़की को हमेशा परिवार के लिए बोझ के रूप में देखा जाता है। यह दहेज प्रथा ही है, जिसने कन्या भ्रूण हत्या को जन्म दिया है। कई दम्पतियों ने कन्या भ्रूण हत्या का विरोध भी किया है। भारत में नवजात कन्या को लावारिस छोड़ने के मामले भी सामान्य रूप से उजागर होते रहे हैं।

अतः कहा जा सकता है कि दहेज प्रथा की जोरदार निंदा की जानी चाहिए। सरकार ने दहेज को एक दंडनीय अपराध बनाते हुए कानून पारित किया है। लेकिन, देश के ज्यादातर हिस्सों में अभी भी इसका पालन किया जा रहा है जिससे, लड़कियों और उनके परिवारों का जीना मुश्किल हो रहा है।

प्रलय के समय समुद्र अपनी मर्यादा को त्याग देता है और किनारों को छोड़ देता है। लेकिन सज्जन पुरुष प्रलय के समय भी अपनी मर्यादा नहीं छोड़ता।

- चाणक्य

समय का सदुपयोग



- श्रीमती प्रिया
पत्नी - श्री मिथिलेश कुमार
डाटा एंट्री ऑपरेटर

कबीर दास जी ने कहा था -

“काल करे सो आज कर, आज करे सो अब
पल में परलय होगी, बहुरी करेगो कब ?”

“समय” वह अमूल्य धन है, जिसे ईश्वर ने हर जीवित प्राणी को उपहार स्वरूप दिया है। इस वरदान को बुद्धिमान एवं परिश्रमी इंसान उपयोग करते हैं और आलसी व्यर्थ गवा देते हैं। समय का पहिया सदैव चलता रहता है। गया हुआ वक्त कभी वापस नहीं आता। समय संसार की सबसे कीमती चीज है, जो एक बार खो जाने पर दुबारा नहीं मिलता। समय सफलता की वह कुंजी है और समय निरंतर अपनी गति से चलता रहता है। समय किसी की प्रतीक्षा नहीं करती, चाहे कोई राजा हो या फकीर, इसलिए हमें समय का “सदुपयोग” करते हुए समय के अनुसार समयनिष्ठा रहना है और अपने कार्यों को समय के अनुसार करना है।

मानव जीवन में समय सीमित होता है, जब व्यक्ति व्यर्थ कामों में अपना बहुमूल्य समय नष्ट कर देता है तो उसे बाद में समझ में आता है। जब वह जीवन की सफलता में पीछे रह जाता है। समय के सदुपयोग के लिए मनुष्य को अपने प्रतिदिन के कार्य का सम्यक विभाजन कर लेना चाहिए। उसे इस बात की दृष्टि में रख लेना चाहिए कि उसे किस समय क्या करना है। जिस मनुष्य का कार्यक्रम सुनिश्चित नहीं होता उसका अधिकांश समय व्यर्थ में इधर-उधर बीत जाता है। जो मनुष्य अपना निश्चित कार्यक्रम बनाकर मानसिक वृत्तियों को एकाग्र करके कार्य करता है, उसे जीवन में अवश्य सफलता प्राप्त होती है।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है - “समय जात नहीं लागहिं बारा।” अर्थात् समय की गति तीव्र है। प्रत्येक बुद्धिमान व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह समय का उचित मूल्यांकन करते हुए उसका उपयोग करें। यदि हम अपनी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति करना चाहते हैं तो हमें अपने समय का सदुपयोग करना चाहिए, तभी हमारी उन्नति संभव है।

आज जीतने भी सफल व्यक्ति हैं उन्होंने समय की कीमत को पहचाना और उचित समय पर उचित कार्य करके सफलता अर्जित की।

मोबाइल फोन की लत

- श्रीमती सुनिती रानी दास
माँ - श्री सुजीत कुमार दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

वर्तमान में मोबाइल फोन हमारे जीवन का अभिन्न अंग हो गया है। इसके आभाव में हमारे अनेकों महत्वपूर्ण काम रुक जाते हैं। जब व्यक्ति स्वयं को अपने मोबाइल फोन से दूर नहीं रख पाता, इस स्थिति को मोबाइल की लत कहते हैं। मोबाइल फोन का अविष्कार वर्तमान में व्यक्ति के लिए वरदान है। जिस तरह ज्यादा मीठा सेहत के लिए अच्छा नहीं होता ठीक वैसे ही वरदान का इतना उपयोग मतलब मोबाइल की लत भी सेहत के लिए अच्छी नहीं होती।

मोबाइल का अविष्कार -

मोबाइल फोन के अविष्कारक श्री मार्टिन कूपर हैं। उन्होंने अपनी टीम के साथ मिलकर अनेक प्रयासों के बाद सन् 1973 में मोबाइल के रूप में दुनिया को एक सुंदर उपहार दिया। पहला मोबाइल फोन 2 किलोग्राम का था एवं बहुत महंगा था। समय बीतने के साथ-साथ यह आम नागरिक के लिए सामान्य हो गया।

मोबाइल फोन की लत क्या है -

मोबाइल की लत में हम स्वयं को अपने मोबाइल से दूर नहीं रख पाते हैं। कोई विशेष काम न होने पर भी हम मोबाइल को स्क्रोल करते रहते हैं। आज के समय में हमें मोबाइल की इतनी बुरी लत है कि आप इसका अनुमान इस वाक्य से लगा सकते हैं - 'मोबाइल की लत को दूर करने के उपाय हम घंटों लगाकर मोबाइल पर ही दुँडते हैं'। यह आदत हमारे जीवन को बहुत अधिक प्रभावित करता है।

मोबाइल की लत हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है -

हमारे स्वास्थ्य पर मोबाइल फोन के लत का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके अधिक उपयोग से व्यक्ति में चिड़चिड़ापन का होना, हमेशा सिर दर्द की समस्या, नेत्र संबंधित समस्या, अनिद्रा व मोबाइल के हानिकार रेडिएशन से हृदय संबंधित रोग भी हो सकते हैं।

कुछ साल पहले तक मोबाइल फोन इस्तेमाल कर पाना सबके बस में नहीं था, पर समय बीतने के साथ आज आम तौर पर यह सभी के पास देखा जा सकता है। मोबाइल की लत ने हमारे जीवन को बहुत अधिक प्रभावित किया है। अतः हमें इस लत को दूर करने के प्रयास करने चाहिए।

खेल का महत्व



- श्री नेत्र बहादुर थापा
एम.टी.एस.

खेल बहुत ही अच्छी शारीरिक गतिविधि है, जो तनाव और चिन्ता से मुक्ति प्रदान करता है। यह खिलाड़ियों के लिए अच्छा भविष्य और पेशेवर जीवन का क्षेत्र प्रदान करता है। यह खिलाड़ियों को उनके आवश्यक नाम, प्रसिद्धी और धन देने की क्षमता रखता है। इसलिए हम कह सकते हैं कि व्यक्तिगत लाभ के साथ ही पेशेवर लाभ के लिए भी खेल सकते हैं। दोनों ही तरीकों से यह हमारे शरीर, मस्तिष्क और आत्मा को लाभ पहुँचाता है।

स्पोर्ट्स और खेलों का मूल्य - कुछ लोग अपने शरीर और मस्तिष्क की तंदरुस्ती, आनंद आदि के लिए नियमित रूप से खेलते हैं। हालांकि कुछ अपने जीवन में बहुमूल्य दर्जा पाने के लिए खेलते हैं। कोई भी निजी और पेशेवर जीवन में इसके मूल्य को अनदेखा नहीं कर सकता है। पहले ओलम्पिक खेल 1896 में एथेंस में आयोजित हुए थे, जो अब नियमित रूप से हर चार साल बाद विभिन्न देशों में आयोजित होते हैं। इसमें इनडोर और आउटडोर दोनों प्रकार के खेल शामिल होते हैं, जिसमें विभिन्न देशों के खिलाड़ी भाग लेते हैं। कुछ आउटडोर या मैदान में खेले जाने वाले खेल फुटबॉल, हॉकी, वालीबॉल, बेसबॉल, क्रिकेट, टेनिस, खो-खो, कबड्डी इत्यादि हैं, जिन्हें खेलने के लिए मैदान की आवश्यकता होती है। इनडोर खेल जैसे - कैरम, ताश खेलना, शतरंज, टेबिल टेनिस, पहेली आदि हैं, जो घर में बिना किसी मैदान के खेले जा सकते हैं। कुछ खेल इनडोर और आउटडोर दोनों होते हैं जैसे - बैडमिंटन और टेबिल टेनिस।

स्पोर्ट्स और खेल के लाभ - खेल और स्पोर्ट्स हमारे लिए बहुत ही लाभदायक हैं क्योंकि वे हमें समयबद्धता, धैर्य, अनुशासन, समूह में कार्य करना और लगन सिखाते हैं। खेलना हमें आत्मविश्वास के स्तर का निर्माण करना और सुधार करना सिखाता है। यदि हम खेल का नियमित अभ्यास करें, तो हम अधिक सक्रिय और स्वस्थ रह सकते हैं। खेल गतिविधियों में शामिल होना हमें बहुत से रोगों से सुरक्षित करने में मदद करता है, जैसे - गठिया, मोटापा, हृदय की समस्याओं, मधुमेह, आदि। यह हमें जीवन में अधिक अनुशासित, धैर्यवान, समयबद्ध और विनम्र बनाता है। यह हमें जीवन में सभी कमजोरियों को हटाकर आगे बढ़ना सिखाता है। यह हमें बहादुर बनाता है और चिड़चिड़ेपन व गुस्से को हटाकर खुशी का अहसास देता है। यह हमें शारीरिक रूप से तंदरुस्त और मानसिक आराम प्रदान करता है, जिससे कि हम सभी समस्याओं से आसानी से निपट सकें।

अतः खेल गतिविधियों में शामिल होना एक व्यक्ति के लिए बहुत से तरीकों से लाभदायक होता है। यह न केवल शारीरिक ताकत प्रदान करता है बल्कि, मानसिक शक्ति को भी बढ़ाता है। बाहर खेले जाने वाले खेल फुटबॉल, क्रिकेट, वालीबॉल, हॉकी, दौड़ आदि शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक तंदरुस्ती को सुधारने में मदद करते हैं।

प्रार्थना



- श्रीमती ईबानिल्ला रिंग्गा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

है प्रभु हमको शक्ति दो,
है प्रभु हमको भक्ति दो ।

हम दुःखियों का दुःख दूर करें,
शोषक का मद चूर करें ।
सत्यमार्ग पर चलते जाएँ,
कोई अड़चन पास न आए ।
है प्रभु ऐसी कोई युक्ति दो,
है प्रभु हमको शक्ति दो ।

मंगल पथ मंगल हो मंजलि,
मंगल ही परिणाम हो,
मंगल भाव भरी मेरे मन में,
मंगल पूरन काम हो ।

मिथ्या सब भौतिक सुविधाएँ,
बस अपने श्रीचरणों में अनुरक्ति दो ।
है प्रभु ऐसी कोई युक्ति दो,
है प्रभु हमको शक्ति दो ।



अब जबकि हिन्दी को राष्ट्रभाषा की पदवी मिल गई है, हर व्यक्ति का कर्तव्य है कि राजभाषा की उन्नति बढ़ाए और उसकी सेवा करें, जिससे कि सारे भारत में वह बिना किसी संकोच या संदेह को स्वीकृत हो । हिन्दी का पाठ महासागर की तरह विस्तृत होना चाहिए, जिसमें मिलकर और भाषाएं अपना बहुमूल्य भाग ले सकें । राष्ट्रभाषा न तो किसी प्रांत की और न किसी जाति की है । वह सारे भारत की भाषा है और उसके लिए यह आवश्यक है कि सारे भारत के लोग उसको समझ सकें तथा अपनाने का गौरव हासिल कर सकें ।

- सरदार बल्लभभाई पटेल

जल ही जीवन है



- श्री रविन्द्र कुमार
पिता - श्री अलोक कुमार
डाटा एंट्री ऑपरेटर

हम हमेशा से सुनते आए हैं कि “जल ही जीवन है।” पृथ्वी पर उपलब्ध एक बहुमूल्य संसाधन है जल। पृथ्वी के सभी जीवों के लिए जल बहुत ही आवश्यक है। पेड़-पौधे, प्राणी-पक्षी, जीवजंतु, संसार में सभी को जीवित रहने के लिए जल ही प्राथमिक जरूरत है। हम बिना खाना खाए तो कुछ दिनों तक जिंदा रह सकते हैं, पर बिना पानी के कुछ ही दिन निकाल सकते हैं। इस धरती पर देखी जाने वाली सभी हरियाली भी जल की वजह से ही मुमकिन है। बिना जल के जीवन तो मुमकिन ही नहीं है।

पृथ्वी पर जल प्रकृति के अनमोल उपहारों में से एक है। मनुष्य के शरीर में लगभग दो-तिहाई भाग पानी का होता है, जिससे यह साबित हो जाता है कि जल का हमारे जीवन में कितना महत्व है। धरती पर रहने वाले हर प्राणी को पानी की जरूरत होती है। इसके अलावा पेड़-पौधों को भी जल की जरूरत होती है। इसीलिए यह कहा गया है कि जल के बिना जीवन नहीं।

जल आम तौर पर समुद्र, झीलों, कुएँ, तालाब और नहरों आदि में मिलता है। समुद्रों में पाया जाने वाला जल हमारे पीने लायक नहीं होता, क्योंकि यह पानी खारा (नमकीन) होता है। इसे पीने लायक बनाना बहुत कठिन कार्य है। वैज्ञानिक इस जल को शुद्ध बनाने के लिए रोजाना नए प्रयोग कर रहे हैं।

पानी हमारे जीवन के लिए कितना जरूरी है, यह धरती पर रहने वाला हर प्राणी जानते एवं समझते हैं। किन्तु यह जानते हुए भी कि हमारे लिए पानी की कीमत क्या है। हम इसे रोजाना ऐसे ही बर्बाद होने देते हैं। जितने जल की जरूरत होती है हम उससे कहीं ज्यादा जल ऐसे ही बर्बाद कर देते हैं। इसके अलावा निरंतर हो रहा जल प्रदूषण हमारे लिए समस्या खड़ी कर रहा है।

देश के कुछ भाग तो ऐसे हैं जहाँ पीने लायक शुद्ध पानी मिल पाना बहुत कठिन कार्य हो गया है। अगर मिलता भी है तो ऐसे में उन्हें मीलों दूर जाकर पानी मिलता है, जिसमें उनका आधा दिन तो पानी लाने में ही निकल जाता है। दूसरी तरफ बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण पानी की खपत दिनों-दिन बढ़ रही है। इसलिए आज जरूरत है हमें पानी की एक-एक बूँद को बचाने की। जितनी जरूरत हो उसके मुताबिक ही हमें पानी का उपयोग करना चाहिए क्योंकि हम भविष्य में तभी जिंदा रह सकते हैं, यदि हम जल संरक्षण करेंगे।

हिन्दी दिवस 2020 : एक संक्षिप्त विवरण हिन्दी कक्ष (लेखापरीक्षा)

वर्तमान कोविड-19 महामारी के परिप्रेक्ष्य में केन्द्र सरकार द्वारा समय-समय पर जारी किए गए दिशा-निर्देशों एवं मानक प्रचालन प्रक्रिया (एस.ओ.पी.) को ध्यान में रखते हुए तीनों कार्यालयों के केवल समूह अधिकारियों, शाखा अधिकारियों, हिन्दी कक्ष के अधिकारी तथा कर्मचारीगण तथा दोनों कार्यालयों के पत्रिका के तीन-तीन श्रेष्ठ रचनाकारों के विजेताओं को सम्मिलित (कुल 30 अधिकारी एवं कर्मचारीगण को शामिल) करते हुए एवं सामाजिक दूरी को ध्यान में रखते हुए कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), मेघालय, शिलांग, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग और क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, मेघालय, शिलांग द्वारा संयुक्त रूप से गत 14 सितम्बर, 2020 को कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) में सीमित समय के लिए हिन्दी दिवस मनाया गया।

हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर श्री बिनोद भुजेल, कल्याण अधिकारी ने अपने स्वागत भाषण में उपस्थित तीनों कार्यालयों के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत किया। उन्होंने अपने भाषण में राजभाषा से संबंधित विविध जानकारियाँ भी दी तथा कार्यालय में हिन्दी के उपयोग को और अधिक बढ़ावा देने की अपील की। इसके अलावा सम्पूर्ण राष्ट्र को एक कड़ी में पिरोये रखने के लिए हिन्दी भाषा की एक अहम भूमिका है। इस भाषा के जरिये हम एक दूसरे की भावना को भली-भाँति समझ सकते हैं, अर्थात् दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि यह भाषा सेतु का कार्य करती है। इसके अलावा उन्होंने यह भी कहा कि हमें हिन्दी के कठिन शब्दों के बजाए सहज-सरल शब्दों का उपयोग करना चाहिए तथा हम अंग्रेजी के शब्दों को लिप्यांतरण के रूप में भी उपयोग कर सकते हैं।

इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) और कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की वार्षिक हिन्दी पत्रिकाओं, क्रमशः “नवीन पूर्वांचल संदेश” के 15 वें अंक तथा “पूर्वाशा” के 29 वें अंक का विमोचन प्रधान महालेखाकार, महालेखाकार और प्रधान निदेशक के करकमलों द्वारा किया गया। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हिन्दी दिवस के अवसर पर गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रेषित संदेश का कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के वरिष्ठ अनुवादक, मुहम्मद जियाउल हक द्वारा पाठ किया गया। इस अवसर पर कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) की “नवीन पूर्वांचल संदेश” और कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा) की “पूर्वाशा” पत्रिका के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों को प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार के लिए नगद राशि एवं प्रमाण-पत्र भी प्रधान महालेखाकार, महालेखाकार और प्रधान निदेशक के करकमलों द्वारा प्रदान किए गए। अन्ततः इस वर्ष के हिन्दी दिवस कार्यक्रम का समापन समारोह कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी) के वरिष्ठ लेखा अधिकारी, श्री आनन्द कौशल के धन्यवाद ज्ञापन और राष्ट्रगान के साथ किया गया।

दिन-प्रतिदिन के कार्य निरवाहन में प्रचलित वाक्यांश

संक्षिप्त रिपोर्ट	-	Abridged report
यथा प्रस्तावित कार्रवाई की जाए	-	Action may be taken as proposed
तुलन पत्र	-	Balance sheet
जीवनवृत्त	-	Bio data
संवर्ग	-	Cadre
केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क	-	Central Excise
प्रतिनियुक्ति	-	Deputation
नियत तिथि	-	Due date
गबन	-	Embezzlement
रोजगार	-	Employment
मूल्यांकन	-	Evaluation
अनुवर्ती कार्रवाई	-	Follow&up action
अग्रेषण पत्र	-	Forwarding letter
सामान्य सभा, साधारण बैठक	-	General meeting
राजपत्रित	-	Gazetted
अर्ध वेतन छुट्टी	-	Half pay leave
हिन्दी शिक्षण योजना	-	Hindi Teaching Scheme
आयकर	-	Income Tax
कार्यग्रहण/कार्यरम्भ तारीख	-	Joining date
तर्कसंगति, औचित्य	-	Justification
अभिलेखपाल	-	Keeper of records
कुंजी	-	Key
सम्पर्क अधिकारी	-	Liaison Officer
पुस्तकालय	-	Library
पुस्तिका, नियमावली	-	Manual
पत्रिका	-	Magazine
नामिती, नामित व्यक्ति	-	Nominee
टिप्पणी	-	Note
प्रेक्षण	-	Observation

इस कार्यालय से सेवा निवृत्त कर्मचारियों का विवरण (सितम्बर 2020 से अक्टूबर 2021 तक)

नाम एवं पदनाम

सेवा निवृत्ति तिथि

- | | |
|---|------------|
| 1. श्री जोशवा ल्यूक रानी, एम.टी.एस. | 01-12-2020 |
| 2. श्रीमती मेडालिन सोहटुन, वरिष्ठ लेखापरीक्षक | 28-02-2021 |
| 3. श्री संजय शुक्लवैद्य, वरिष्ठ लेखापरीक्षक | 30-04-2021 |

“पूर्वाशा” परिवार उपरोक्त सेवानिवृत्त कर्मचारियों के स्वस्थ, सक्रिय एवं दीर्घायु जीवन की तहे दिल से मंगल कामना करता है ।

- सम्पादक मण्डल



श्रद्धांजलि

नाम एवं पदनाम	जन्म तिथि	मृत्यु की तिथि
1. स्वर्गीय मानकोर्दोर नोंगब्री, एम.टी.एस.	18-10-1962	08-01-2021
2. स्वर्गीय वानलयबोर सिएमलेह, स.ले.प.अ.	13-11-1984	18-07-2021

उपरोक्त कर्मचारी के असामयिक निधन पर “पूर्वाशा” परिवार उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता है ।

- सम्पादक मण्डल

अंग्रेजी पढ़ि के जदपि सब गुन होत प्रवीन ।
पै निज भाषा ज्ञान बिन राहत हीन के हीन ॥

- श्री भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

क्रम संख्या.....04.....



समय ज्ञाने

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
गृह मंत्रालय
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
महानिदेशालय असम राइफल्स
DIRECTORATE GENERAL ASSAM RIFLES
शिलांग – 793010
SHILLONG - 793010

प्रमाणित किया जाता है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), शिलांग की राजभाषा शील्ड योजना के तहत कार्यालय प्रधान महानिदेशाकार (ले.प.) शिलांग ने वर्ष 2019-2020 के दौरान राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में प्रशंसनीय कार्य किया है।

इस उपलब्धि के लिए उन्हें प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

महानिदेशक असम राइफल्स
Director General Assam Rifles
एवं अध्यक्ष नराकास, शिलांग
Chairman TOLIC, Shillong

दिनांक : 12 सितम्बर 2021



कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के सम्मेलन कक्ष में दिनांक 20/01/2021 को एम.टी.एस. के लिए आयोजित जैकेट वितरण कार्यक्रम में श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग के करकमलों द्वारा जैकेट प्राप्त करती हुई श्रीमती कश्मिरो कौर, एम.टी.एस. एवं श्री पिनशंगैन खरनैओर, एम.टी.एस. ।



दिनांक 16-04-2021 को पोलो मैदान, शिलांग में आयोजित एक दिवसीय इंट्रा ऑफिस स्पोर्ट्स मीट के अवसर पर डजन स्टोन का खेल खेलती हुई श्रीमती शेफाली एस. अंदलीब, महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग ।

दिनांक 16-04-2021 को पोलो मैदान, शिलांग में आयोजित एक दिवसीय इंट्रा ऑफिस स्पोर्ट्स मीट के अवसर पर अधिकारी एवं कर्मचारी रस्साकशी का खेल खेलते हुए ।



दिनांक 16-04-2021 को पोलो मैदान, शिलांग में आयोजित एक दिवसीय इंट्रा ऑफिस स्पोर्ट्स मीट के अवसर पर फुटबॉल मैच खेलने के लिए तैयार कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग की टीम ।